RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 88/प्रकाशन तिथि 1 नवम्बर 2024
अंक 458-459 नवम्बर-दिसम्बर 2024

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

मेरा पन्ना

विशेषांक

मूल्य ₹100

प्रिय दोस्तो!

कई बार पालकों, टीचर और बच्चों के साथ काम करने वाले लोगों ने हमसे पूछा है कि हम किस तरह की रचनाएँ पसन्द करेंगे। चूँकि यह सवाल हम से बच्चों की रचनाओं के सन्दर्भ में ही अक्सर पूछा जाता है तो हमने सोचा कि इस बाल दिवस विशेषांक में हम इस बात की थोड़ी-सी चर्चा कर सकते हैं।

जब भी बच्चों की लिखी हुई कोई रचना हमारे पास आती है तो पहले तो हम यह देखते हैं कि रचना मौलिक है या नहीं। कई बार रचनाएँ मौलिक नहीं होती हैं क्योंकि बच्चे समूह में या फिर क्लास में साथ बैठकर रचनाएँ लिखते हैं। कभी-कभी वे अपनी पाठ्यपुस्तकों या अन्य किताबों से पढ़ी हुई रचनाएँ भी लिख देते हैं। ऐसा ना करने पर भी कई बार बच्चों की रचनाएँ बहुत मिलती-जुलती हो सकती हैं, खासकर तब जब वे हमारे द्वारा पूछे गए किसी सवाल के जवाब हों या फिर दिए गए किसी विषय पर बनाए गए चित्र हों। ऐसे में हम यह ध्यान रखते हैं कि बच्चे ने क्या लिखा है और किन शब्दों में लिखा है। और उन रचनाओं को चुनते हैं जिनमें बच्चे ने बात बेहतर ढंग से रखी हो। अपनी भाषा में, स्पष्ट तरीके से शब्दों को बुनकर रचना लिखी हो।

हमारे पास बच्चों के कई बढ़िया चित्र आते हैं। चित्रों में भी हम पहले मौलिकता देखते हैं। हमारे लिए ये ज़रूरी नहीं है कि चित्र सुन्दर हो। लेकिन यह ज़रूरी है कि उसमें बच्चे की कल्पना की क्या उड़ान है। हमारा ध्यान विषय के साथ-साथ इस पर भी रहता है कि उसमें कितनी बारीकी से काम किया गया है – सिर्फ हुनर ही नहीं, बल्कि यह भी मायने रखता है कि उसमें बच्चे ने किन-किन बातों पर गौर किया है और उन्हें चित्र में शामिल किया है। हम यह भी देखते हैं कि रंगों का चयन कैसा है, अलग-अलग रंगों को कैसे इस्तेमाल किया गया है।

कुल मिलाकर हम उन रचनाओं को लेते हैं जो थोड़ी अलग हैं और जिनमें कुछ नयापन है, खासकर जिन्हें पढ़ने-देखने में हमें लगता है कि बच्चों को मज़ा आएगा।

ये तो रही बात हमारी – कि हम क्या सोचते हैं कि बच्चे *चकमक* में क्या देखना-पढ़ना चाहेंगे और क्यों। अब बच्चों की बारी। हम तुमसे जानना चाहते हैं कि *चकमक* में तुम क्या देखना चाहोगे। सिर्फ दूसरे बच्चों से ही नहीं, बड़ों से भी क्या जानना चाहोगे। अपने साथियों से कौन-से सवालों का जवाब चाहोगे, किस तरह के किस्से सुनना-देखना चाहोगे। ये भी बताना कि बड़ों द्वारा लिखी गई कहानियों, कॉमिक, कॉलम व लेखों के विषय कैसे हों। भाषा, शैली के बारे में तुम्हारे कोई सुझाव हों तो उन्हें भी लिख भेजना। किस तरह की सामग्री कम की जाए, तुम क्या ज़्यादा पढ़ना चाहोगे... इत्यादि।

तुम्हारे जवाबों का हमें इन्तज़ार रहेगा। ये सवाल हम इस विशेषांक के 'क्यों-क्यों' कॉलम में पूछ रहे हैं और इनके जवाब तुम जनवरी 2025 के अंक में पढ़ पाओगे।

कविता, कनक और विनता
चकमक सम्पादकीय टीम

अंक 458-459 • नवम्बर-दिसम्बर 2024

चकमक

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल है:

चकमक में तुम किस-किस तरह की सामग्री पढ़ना-देखना चाहोगे, और क्यों?

चित्र: शोएम, पाँचवीं, दीपालया सीनियर सैकेंडरी स्कूल, घुसबेठी, हरियाणा

आवरण चित्र: कानातो जिमो

सम्पादक
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

डिज़ाइन
कनक शशि

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

इस बार...

बदबू से आज़ादी - उज़मा 7

भूकम्प के झटके - प्रज्ञा मिश्रा 7

तितली प्यारी - सऊद 7

मेरे गाँव के तालाब - रुद्र 9

डर - ऋतुजा मते 9

पढ़ने का हक - सोनू, सुनील और गीताजंलि 10

चुटकुले - कियारा 10

कोराना के समय की यादें - गौतम कुमार 12

चित्र में ढूँढो 14

बगिया में स्टेशन - धर्मेन्द्र 16

नाटकबाज़ चींटियाँ - वत्सला 17

छुटकी की मछलियाँ - वेदिका श्रीवास्तव 19

अन्तर ढूँढो 20

सुडोकू -1 20

बहुत सुन्दर पेड़ - रोहन 21

श्रम की गरिमा - सोनू साहू सिंह 22

अन्तर ढूँढो - प्रिया कुरियन 25

बरसात में खेत का अनुभव - अजीत कुमार 26

सिर्फ चाबी - कविता 28

बिहार की बाढ़ - अंकित कुमार 28

एक ज़रूरी समाचार - रिद्धि कपूर 28

चित्र पहेली -1 30

केशू और झांझी - मानवी 33

भूलभुलैया - 1 अविराज 34

गुब्बारा आज़ाद हो गया - अरशान 35

फिल्म चर्चा 36

तेंदूपत्ता तोड़ना - दुर्गा पोड़ियामी 38

माथापच्ची 42

चादर - सोनम 44
तुम भी बनाओ 46
गाँव का इतिहास - जसोदा पाठक 48
टुण्डला का इतिहास - आयरा 49
क्या मिला? - इशिका 50
मेरी खिलाड़ी टीचर - आराध्या गुप्ता 51
हमारा पहला मैच - आदित्य रमन 51
चित्र पहेली -2 52
खेल में हुआ ज़ोरदार झगड़ा - सार्थ गजानन देशिंगकर 54
खेल का किस्सा - शनाया 55
बास्केट बॉल - वेधा गुप्ता 55
मैं समझ गई... - चार्या मुकुन्दा गोडबोले 56
तुम भी जानो 59
तुम भी पकाओ 60
किताबें कुछ कहती हैं... 62
भूलभुलैया -2 64
खेती में बदलाव - आदित्य और हर्ष 67
पुराने खेल - अन्विता जोशी 69
खिलाड़ी विनेश फोगाट - ओलीना खुराना 69
चित्र पहेली -3 70
सुडोकू -2 71
कहानी पूरी करो 72
बस्तर चो दसराहा - राधिका मौर्य 74
किताबें कुछ कहती हैं... 76
माथापच्ची 78
समाचार 80
क्यों-क्यों 82
मैटी के नाम पत्र - कशिश 88

चित्र: रुद्र गोसावी, सातवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

बदबू से आज़ादी

उज़मा
चौथी, सावित्रीबाई फुले फातिमा शेख लाइब्रेरी
भोपाल, मध्य प्रदेश

हमारे घर के पास एक बड़ा नाला है। जब बारिश होती है तो वो पूरा भर जाता है। लोग निकल भी नहीं पाते। उसकी गन्दगी चारों तरफ फैल जाती है। और बहुत बदबू आती है। मुझे उससे आज़ादी चाहिए।

भूकम्प के झटके

प्रज्ञा मिश्रा
छठवीं, शिक्षान्तर स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

भूकम्प के झटके खाकर
घर से भागे सारे लोग
छोटे-बड़े सभी ने किया
अपनी टाँगों का उपयोग
आसान नहीं धीरज रखना
जब समय हो ऐसा मुश्किल
मोटे-पतले, अमीर-गरीब
सबकी हिम्मत जाती है हिल
धरती जब डगमग करती
डर जाता गोरा हो या काला
शुरू से अन्त तक जिसका कुछ न बिगड़े
समझो वो है किस्मतवाला

तितली प्यारी

सऊद
तीसरी, सावित्रीबाई फुले फातिमा शेख लाइब्रेरी
भोपाल, मध्य प्रदेश

चित्र: महिमा आसरे, चौथी, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, मरोड़ा, एकलव्य फाउंडेशन, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

मैंने देखी एक तितली प्यारी
लाल-लाल और काली-काली
उस पर थी नीली धारी
घूमे वो तो डाली-डाली

चित्र: पिंकी कुमारी, सातवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

मेरे गाँव के तालाब

रुद्र
छठवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल
पाड़ा, करनाल, हरयाणा

मेरे गाँव में चार तालाब हैं। इनके इर्द-गिर्द घूमने के लिए ट्रैक बने हैं। इनमें कुछ बड़े तालाब हैं और कुछ छोटे। इनमें से मुझे सबसे बड़ा तालाब पसन्द है। क्योंकि उसका पानी सबसे साफ है। उसके आसपास काफी पेड़ हैं। और उनके ऊपर बहुत सारे फल लगे हैं। मुझे उनके फल खाना पसन्द है। क्योंकि वे फल काफी मीठे होते हैं।

डर

ऋतुजा मत्ते
बारहवीं, ज़िला परिषद जूनियर कॉलेज
भद्रावती, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

सर्दी के दिन थे। हम स्कूल से लौटे थे और अपने-अपने काम में लगे थे। अचानक पता चला कि बस स्टॉप पर अनिल भैया का एक्सीडेंट हो गया है और वहीं उनकी मृत्यु हो गई है। जब हम उन्हें देखने गए तब रात के 9 बजे थे। पुलिसवाले अपना काम कर रहे थे। वो दृश्य देखकर मेरे मन में डर बैठ गया।

दूसरे दिन मैं ट्यूशन से ऑटो से लौट रही थी। हमारे ऑटो में मैं, मेरी दोस्त और ऑटोवाले अंकल थे। हमारा ऑटो अचानक से बस स्टॉप पर ही बन्द पड़ गया। दो-तीन दिन यही होता रहा। ऑटो अचानक से बस स्टॉप पर ही बन्द पड़ जाता था।

बहुत डर लगता था। कभी-कभी लगता था जैसे भैया की आत्मा हमारे पीछे आ रही है। मैंने 4 दिन ट्यूशन से छुट्टी ले ली। मगर पाँचवें दिन फिर वही बात हो गई। उस दिन भी ऑटो अचानक से बस स्टॉप पर ही बन्द पड़ गया।

गाँववालों ने उस जगह पूजा-पाठ करके शान्ति करवाई। उसके बाद तो मेरा ऑटो कभी रात को वहाँ बन्द नहीं हुआ। लेकिन अब भी जब रात को बस स्टॉप पर अकेली होती हूँ तो डर जाती हूँ। लगता है भैया अब भी ज़िन्दा हैं आसपास...

पढ़ने का हक

सोनू, सुनील और गीताजंलि
सातवीं व आठवीं, कथा कानन
लाइब्रेरी एवं रिर्सोस सेंटर, नगांव, असम

यह कहानी कचरा बीननेवाले एक बच्चे की है। एक दिन कचरा बीनते हुए उसे कूड़ेदान में एक किताब मिली। उस किताब ने उसके मन में पढ़ने की व किताबों के बारे में और जानने की इच्छा जगाई। धीरे-धीरे यह इच्छा उसे आस-पड़ोस के एक सामुदायिक पुस्तकालय तक ले गई। और इस तरह उसे किताबों की जादुई दुनिया का पता चला।

मेरा पन्ना

चुटकुले

दूर की मासी को क्या बोलेंगे?...

फारमसी

.....

एक होनहार छात्र से किसी ने पूछा,
"कितने बजे सोते हो?"
वो बोला, "किताब उठा लूँ तो **१ बजे**
और मोबाइल उठा लूँ तो **2 बजे।**"

.....

टीचर: विदेश में 15 साल के बच्चे
अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं।
चिंटू: मास्टरजी हमारे देश में तो
एक साल का बच्चा भागने लग जाता है।

कियारा, पाँचवीं, सरिस्का, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

USE
ME

कोराना के समय की यादें

गौतम कुमार
चित्र: पंकज सैकिया

मेरा घर बिहार के मोतीपुर बाज़ार में है। जब 2020 में लॉकडाउन लगा था, तो हमारे जैसे गरीब लोगों को बहुत-सी परेशानियाँ झेलनी पड़ी थीं। तब मैं बिहार में था। 2020 में मैं लॉकडाउन में असम आनेवाला था। रेल नहीं चलने के कारण मैं और पापा बस से आ रहे थे। और फिर बंगाल में बस रोक दी गई। वहाँ कोरोना की चैकिंग कर रहे थे। मुझे कुछ भी नाक में डालने से छींक आ जाती है। वे लोग नाक में पाइप घुसा रहे थे। जब मेरी नाक में पाइप घुसाया तो मुझे छींक आ गई। वे लोग मुझे बोल रहे थे कि तुम्हें कोरोना हो गया है। लेकिन मेरे पापा मान नहीं रहे थे। फिर मैं बस में ही बैठकर असम आ गया। पूरे भारत में कोरोना का हल्ला हो गया था। इसमें कितने गरीब बच्चे मरे और इन सब में सरकार की ही लापरवाही थी।

जब मैं असम आ गया तो अकेले ही रहता था। ना ही कोई दोस्त था, ना ही स्कूल खुला था। मैं असम में नया ही आया था। फिर कुछ दिनों बाद मैं घर के बाहर घूमने गया तब मैंने देखा कि एक गरीब आदमी ने मास्क नहीं लगाया था तो उसे पुलिसवाले ने मारा। क्या हम जैसे लोगों के साथ ऐसा ही होना चाहिए? मेरे पापा ठेला चलाते थे। लॉकडाउन में दुकान भी नहीं खुली थी। मैं सोचता था कि मेरे पापा कैसे कमा पाएँगे? अब मेरा घर कैसे चलेगा? क्या यह सरकार की ज़िम्मेदारी नहीं है कि वह गरीबों को काम दे? गरीब दूर-दूर से आते हैं काम करने, क्या बिहार में ऐसी सुविधा नहीं मिलेगी? क्या भारत में हम गरीब लोगों को जीने का अधिकार नहीं है?

लॉकडाउन में हम जैसे गरीब लोगों को एक वक्त की रोटी भी नहीं मिलती थी। क्या यह सरकार की गलती नहीं है? भारत में कितने लोग मरे कोरोना के चक्कर में और यह सब हम गरीबों के साथ ही क्यों होता है? क्योंकि अच्छा खाना भी नहीं मिलता, अच्छी पढ़ाई भी नहीं मिलती, ना ही अस्पताल में अच्छी देखभाल होती है।

मेरा पन्ना

गौतम कुमार, पाँचवीं, कथा कानन लाइब्रेरी एवं रिसोर्स सेंटर, नगांव, असम

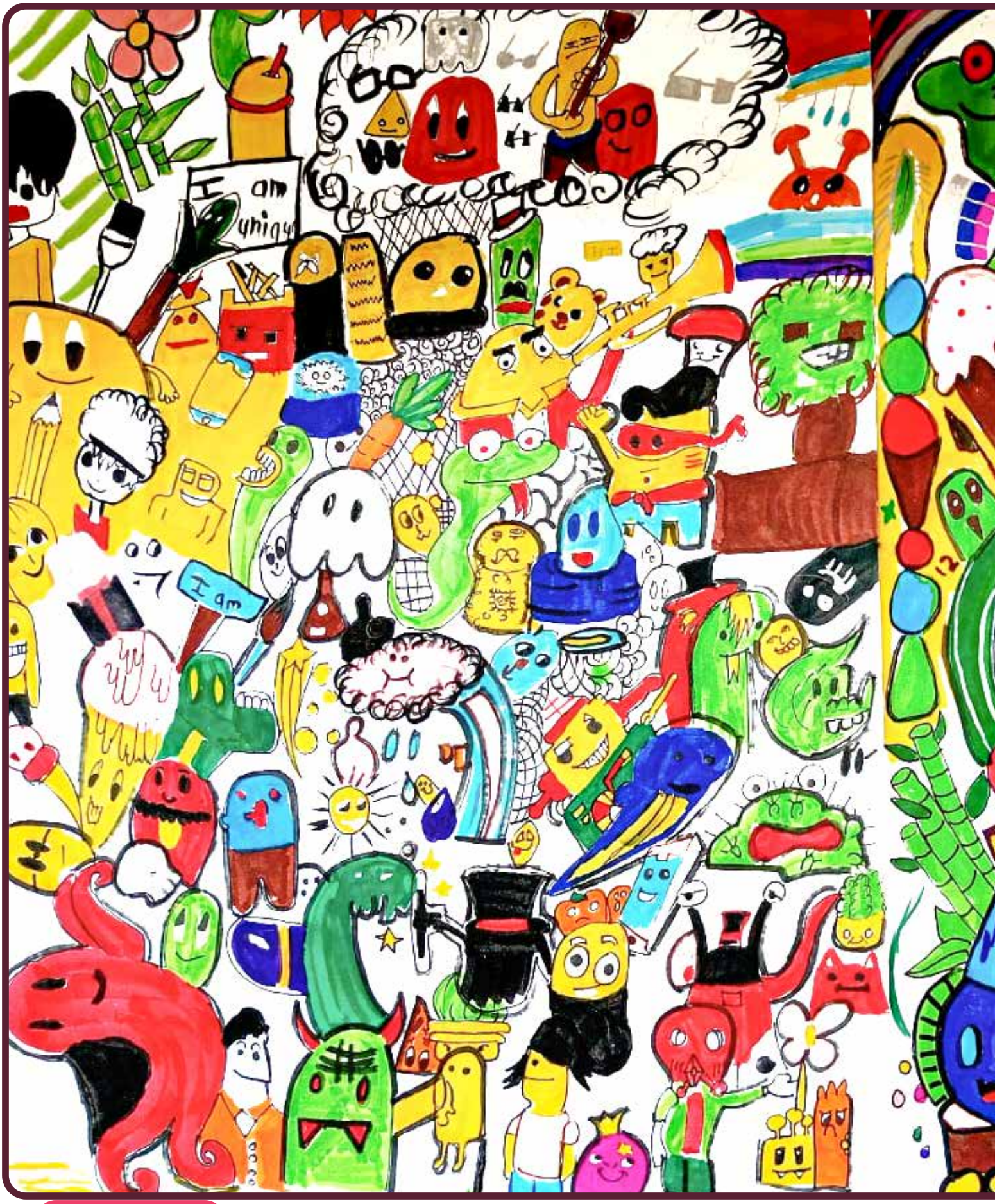
I am
I am

चित्र में ढूँढो

नीचे दी गई चीज़ों को इस चित्र में ढूँढो। तुमने कितनी ढूँढीं?

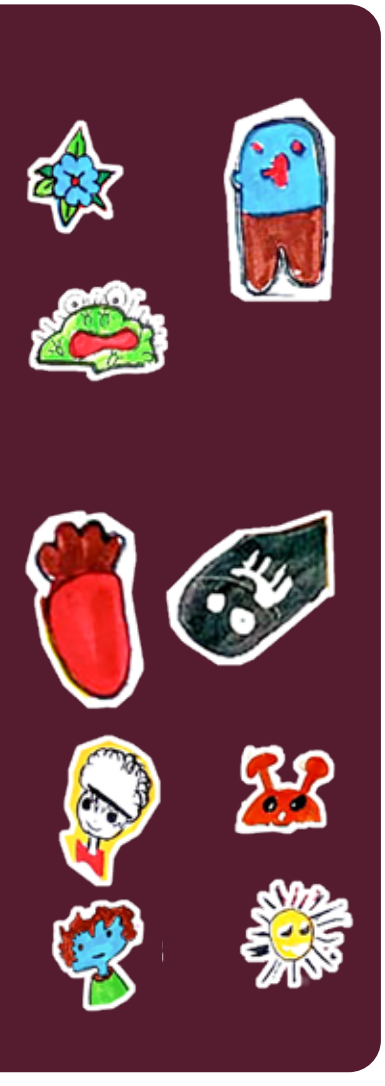

चित्र: भास्कर गिरी, पाँचवीं, दिल्ली पुलिस पब्लिक स्कूल, वज़ीराबाद, दिल्ली

बगिया में स्टेशन

चित्र व कहानी: धर्मेन्द्र
आठवीं, कम्पोज़िट स्कूल, धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

हम लोग श्रावस्ती ज़िले के एक गाँव में रहते थे। मेरे पिताजी काम के सिलसिले में पास के ज़िले बलरामपुर आए और यहीं बस गए। हम लोग भी यहीं पढ़ने लग गए। हमारा गाँव यहाँ से 30 किलोमीटर दूर है। इस बार के बजट में बलरामपुर से श्रावस्ती से होते हुए बहराइच तक के लिए नई रेलवे लाइन पास हुई है। यह रेलवे लाइन हमारे गाँव से होकर जाएगी।

एक दिन बहुत-सारे अधिकारी बड़ी-बड़ी गाड़ियों में हमारे गाँव आए। उनके साथ बन्दूक लिए हुए पुलिस थी। और कर्मचारी भी थे। वे हमारे खेतों की नपाई कर रहे थे। उसी में मेरी छोटी-सी बगिया भी नप गई। मेरी बगिया में आम, कटहल, अमरूद आदि के बहुत-से पेड़ लगे थे। कुछ दिनों बाद ही नोटिस आया। पेड़ काटने का नोटिस।

गाँव के सभी लोग तो बहुत खुश थे कि गाँव में स्टेशन बनेगा। और खेतों के अच्छे पैसे मिलेंगे। लेकिन मैं नहीं चाहता कि मेरे पेड़ कटें।

नाटकबाज़ चींटियाँ

वत्सला
चित्र: हबीब अली

पापा रोज सुबह पहले पूजा करते हैं। उसके बाद ही कोई काम करते हैं या ऑफिस जाते हैं। आज सुबह पूजा से पहले पापा ने पूजा के बरतन को देखकर मुझे आवाज़ दी। जब मैं पापा के पास गई तो पापा ने पूजा की प्रसाद वाली कटोरी दिखाते हुए कहा कि वो रोज़ मिस्री के एक-दो दाने पूजा के बाद उस कटोरी में छोड़ देते थे। उसे कुछ छोटी काली चींटियाँ धीरे-धीरे खाती रहती थीं।

आज उस बरतन में आठ-दस चींटियाँ मरी-सी पड़ी थीं। वो न हिलती थीं और न चलती थीं। उनमें कुछ के पैर ऊपर की ओर उठे हुए थे और कुछ करवट लिए पड़ी थीं। पापा दुखी थे और मुझसे कहने लगे कि पता नहीं क्यों आज ये चींटियाँ मर गईं। पहले तो कभी ऐसा नहीं हुआ। बेचारी कितने मज़े-से मिस्री के दाने खाती थीं। मैं भी चुप-सी थी।

फिर पापा पूजा की उस कटोरी को धोने के लिए बाहर के नल पर जाने लगे तो मैं भी साथ गई। पापा ने नल के पास बने चबूतरे पर प्रसाद वाली कटोरी को उल्टा करके उन चींटियों को जैसे ही नीचे गिराया, अरे! ये क्या? चींटियाँ तो मानो अँगड़ाई लेकर उठ खड़ी हुईं और इधर-उधर भागने लगीं। यानी कि ये मरी नहीं थीं, बल्कि भरपेट भोजन के बाद मज़े-से नींद ले रही थीं और उन्होंने बेवजह ही हमें डरा भी दिया। आलसी, नाटकबाज़ चींटियाँ...

मेरा पन्ना
वत्सला, सातवीं, मदर टेरेसा स्कूल, कानपुर, उत्तर प्रदेश

चित्र: ऋतिका रावत, छठवीं, दिल्ली पुलिस पब्लिक स्कूल, वज़ीराबाद, दिल्ली

छुटकी की मछलियाँ

चित्र व कहानी: वेदिका श्रीवास्तव
पाँचवीं, सेंट फिदेलिस कॉलेज
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

बब्बुल एक गरीब और मेहनती मछुआरा था। वह रोज़ गाँव के पास वाली नदी में मछली पकड़ने जाता था। वह पूरे दिन मेहनत करता था। पर उसकी ज़्यादा बिक्री नहीं होती थी। वह मछलियों को एक छोटे-से घड़े में भरकर बाज़ार ले जाता था।

उसके पड़ोस में एक नटखट लड़की छुटकी रहती थी। एक दिन वह रोज़ की तरह शैतानी कर रही थी। उसने एक गेंद उठाई और घर के सामान पर फेंकने लगी। अचानक वह गेंद खाली मटकियों पर लगी और मटकियाँ गिरकर फूट गईं। आवाज़ सुनकर उसकी माँ भागी चली आईं। जब उन्होंने देखा कि छुटकी ने यह सब किया है, तो सज़ा के तौर पर उसे मछली पकड़कर लाने को कहा।

छुटकी आलसी तो थी। पर चालाक भी बहुत थी। जब वह घर से बाहर निकली तो देखा कि बब्बुल बहुत सारी मछलियाँ मटके में लेकर जा रहा था। छुटकी ने चुपचाप घर से एक पानी से भरी मटकी ली और बब्बुल के पीछे चल पड़ी। उन मछलियों को जब पानी दिखा तो वे सब छुटकी के मटके में कूद गईं।

और छुटकी का काम हो गया।

चित्र: कियारा मल्होत्रा, चौथी, कार्बेट, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

इन दो चित्रों में कुछ अन्तर हैं। तुमने कितने ढूँढे?

सुडोकू -1

2	1	4	5	3	
				4	
			1	6	5
		6			
			6	1	
			3		4

दिए हुए बॉक्स में 1 से 6 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 6 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

जवाब पेज 86 पर

ढूँढो अन्तर

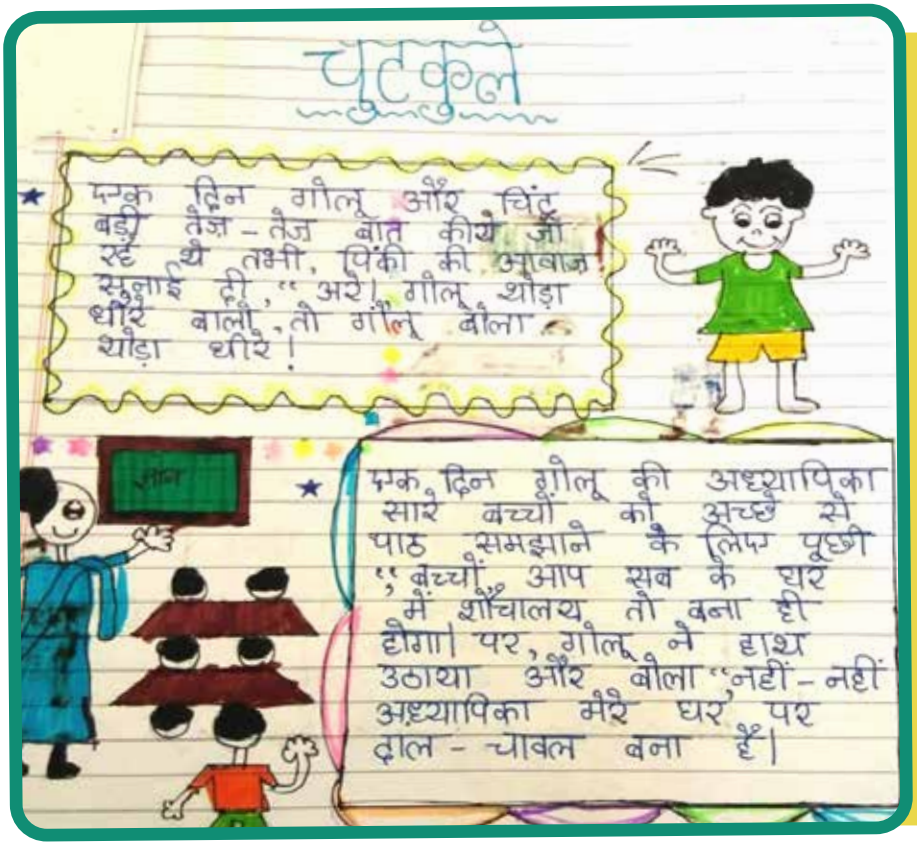

अक्षिता वर्मा, पाँचवीं, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल, चंगलपेट, तमिलनाडु

बहुत सुन्दर पेड़

रोहन
आठवीं, राजकीय इंटर कॉलेज
खरसाड़ा-पालकोट, टिहरी गढ़वाल उत्तराखण्ड

मैं आज सुबह उठा। मैंने एक पेड़ देखा। वह पेड़ बहुत बड़ा है। बारिश भी हो रही है। बारिश की बूँदें गिर रही हैं। बूँदें जब पत्तियों पर गिर रही हैं, तो लग रहा है कि चमकीली बूँदें गिर रही हैं। सोच रहा हूँ कि दिन भर इस पेड़ के नीचे बैठा रहूँ। पेड़ एक फव्वारा जैसा लग रहा है। बारिश के मौसम में पेड़ बहुत सुन्दर दिख रहा है।

मेरा पन्ना

श्रम की गरिमा

सोनू साहू सिंह
आठवीं, कथा कानन
लाइब्रेरी एवं रिसोर्स सेंटर
नगांव, असम

हम लोग अपने रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में बहुत कुछ सामान इस्तेमाल करते हैं। क्या आपको पता है कि यह सामान कैसे बनते हैं? और इसमें कितनी मेहनत होती है? मोबाइल में सर्च करो तो जिस चीज़ के बारे में सर्च करो वह चीज़ मशीनों से बनती दिखेगी। लेकिन क्या आपको पता है कि हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में कपड़े धोने के लिए इस्तेमाल होने वाला साबुन कैसे बनता है? और इस साबुन को हाथ से बनाने में कितनी मेहनत और समय लगता है? और जो लोग यह साबुन बनाते हैं उनका क्या वेतन होता है? इन्हीं सवालों का जवाब हम आगे ढूँढने की कोशिश करेंगे।

हम जहाँ गए, वहाँ के बारे में

हम लोग ढेला साबुन फैक्ट्री गए और वहाँ सुखमय दत्ता जी से मिले। वे पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी में रहते थे। वहाँ से वे 18 साल की उम्र में आए और अपने मामा के साथ मिलकर साबुन बनाने का काम सीखा। वे साल में एक या दो बार अपने गाँव जाते हैं। वे सुबह के 6 बजे से लेकर शाम के 5 बजे तक काम करते हैं।

उनका काम कैसा है?

तो सबसे पहले राइस ब्रांड ऑयल के साथ जानवर की चर्बी आदि मिलाकर उसको आग में गर्म किया जाता है। फिर उसमें कास्टिक सोडा मिलाकर राइस ब्रांड ऑयल को फाड़ने का काम किया जाता है। वैसे ही, जैसे दूध में थोड़ा दही मिलाकर दूध को फाड़ा जाता है। फिर इस फटे हुए मिश्रण को सिलिकेट में मिलाया जाता है। उस सिलिकेट में बालू, काँच का पाउडर आदि होता है। अच्छे-से मिलाकर इस मिश्रण को ठण्डा करने के बाद वे अच्छे-से गोल साबुन का आकार देकर इसे रख देते हैं।

इस काम से स्वास्थ्य को होने वाले खतरे

वे लोग इतनी गर्मी में आग के पास खड़े होकर काम करते हैं और पंखे की हवा भी कम होती है। जब वे कास्टिक सोडा मिलाते हैं तब कास्टिक सोडा उड़कर नाक में जाता है। यह फेफड़े तक भी जाता है। इससे फेफड़े में एक परत बनती है, जिससे साँस फूलने की बीमारी हो सकती है। नाक के अलावा यह आँख और त्वचा के लिए भी खराब होता है।

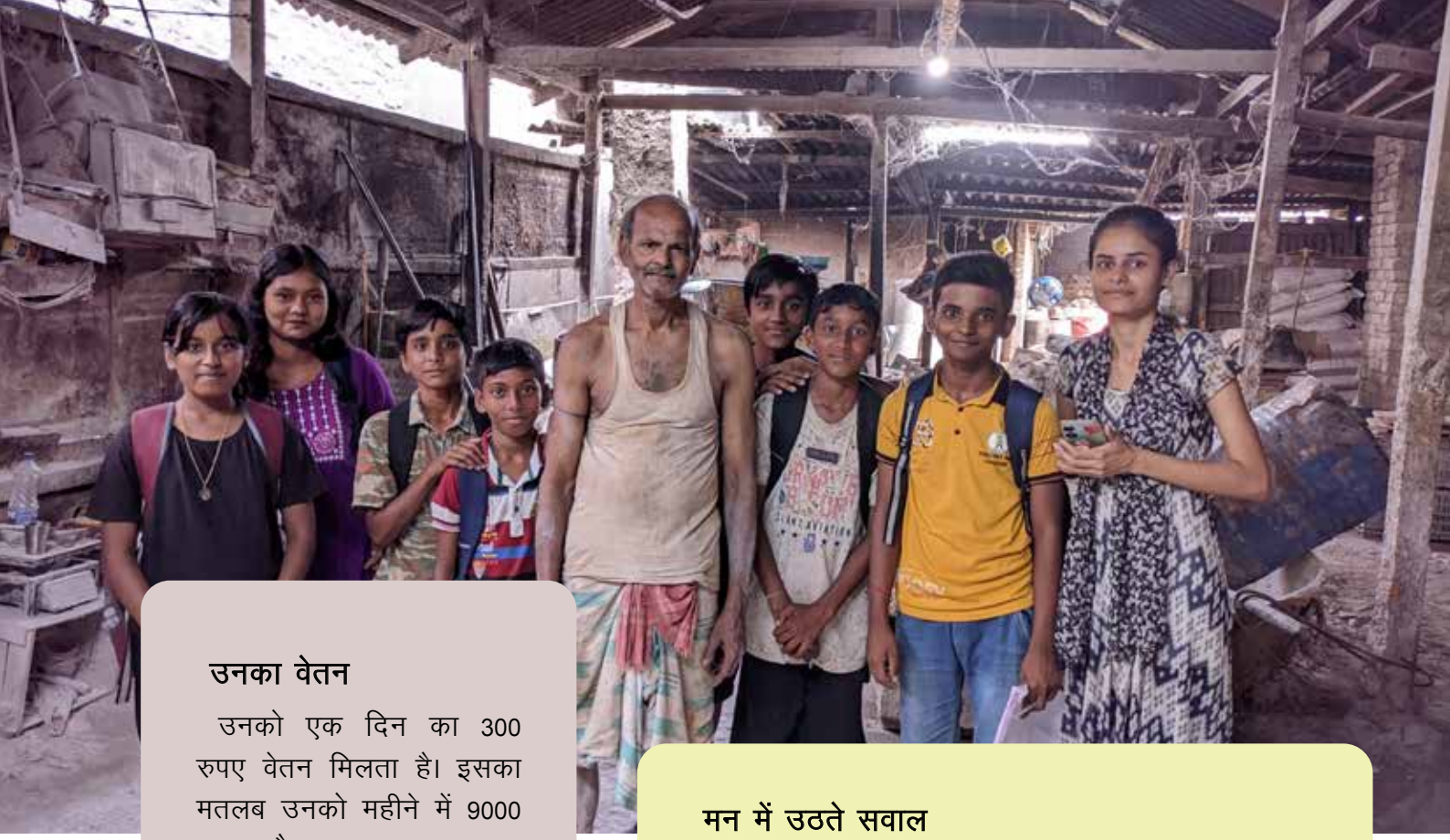

उनका वेतन

उनको एक दिन का 300 रुपए वेतन मिलता है। इसका मतलब उनको महीने में 9000 रुपए और साल का 1,08,000 रुपए मिलते हैं। दत्ता जी अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर दिन में लगभग 1000 साबुन बनाकर निकालते हैं। एक साबुन को मालिक 37 रुपए में बेचते हैं। इस हिसाब से उनके मालिक को लगभग 1000 साबुन से 37000 रुपए मिलते हैं और कर्मचारियों को हर दिन का सिर्फ 300 रुपए। इतनी गर्मी में जान का जोखिम उठाकर की जाने वाली इस मेहनत का मूल्य सिर्फ 300 रुपए देना उचित है क्या? साथ में उनका स्वास्थ्य बीमा भी नहीं है। क्या उनका वेतन और ज़्यादा नहीं होना चाहिए? और क्या उन कर्मचारियों के श्रम की गरिमा सिर्फ इतनी ही है?

मन में उठते सवाल

जब हम सुखमय दत्ता जी से मिले तो हमने देखा कि उनके पूरे शरीर में कास्टिक सोडा था। वे बहुत बुज़ुर्ग हैं। उनकी उम्र बहुत ढल चुकी है। जब हम उन कर्मचारियों के काम के क्षेत्र में गए तब वहाँ की गर्मी बहुत भयानक थी। मेरे मन में यह बात घूम रही थी कि हम अगर इन चन्द मिनट में इतनी घुटन महसूस कर रहे हैं, तो ये कर्मचारी जो इतने दिनों से काम कर रहे हैं उन्हें कैसा लगता होगा? क्या इन्हें घुटन महसूस नहीं होती होगी?

जब सुखमय दत्ता जी ने कहा कि उन्हें 300 रुपए मिलते हैं तो मैं दंग रह गया। हमने सोचा कि यह साबुन इनकी मेहनत से बना है और उनके मालिक सिर्फ इनको 300 रुपए ही देते हैं। जब सुखमय दत्ता जी हमें अपने काम के बारे में बता रहे थे तो हम उनके साथियों को देख रहे थे। वे खाँस रहे थे और खुजला रहे थे। बाद में जब पता चला कि ये कास्टिक सोडा की वजह से है, तो हम इसके अंजाम से डर गए। लेकिन अगर वे कास्टिक सोडा के स्वास्थ्य के प्रति खतरे के बारे में जानेंगे तो उसके बाद भी क्या उनकी आर्थिक स्थिति उनको उनके श्रम का यही मूल्य मिलने पर मजबूर करेगी?

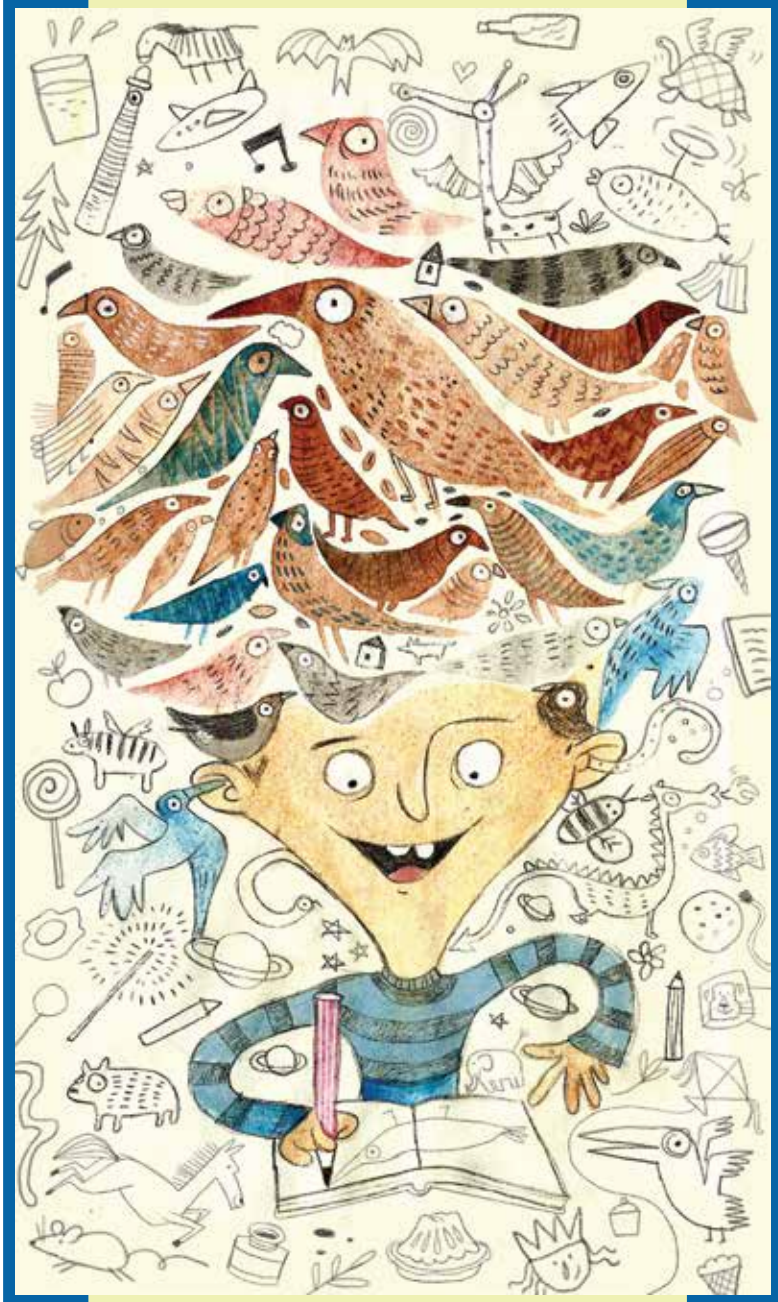

ढूँढो अन्तर

इन दो चित्रों में सात से ज़्यादा अन्तर हैं।
तुमने कितने ढूँढे?

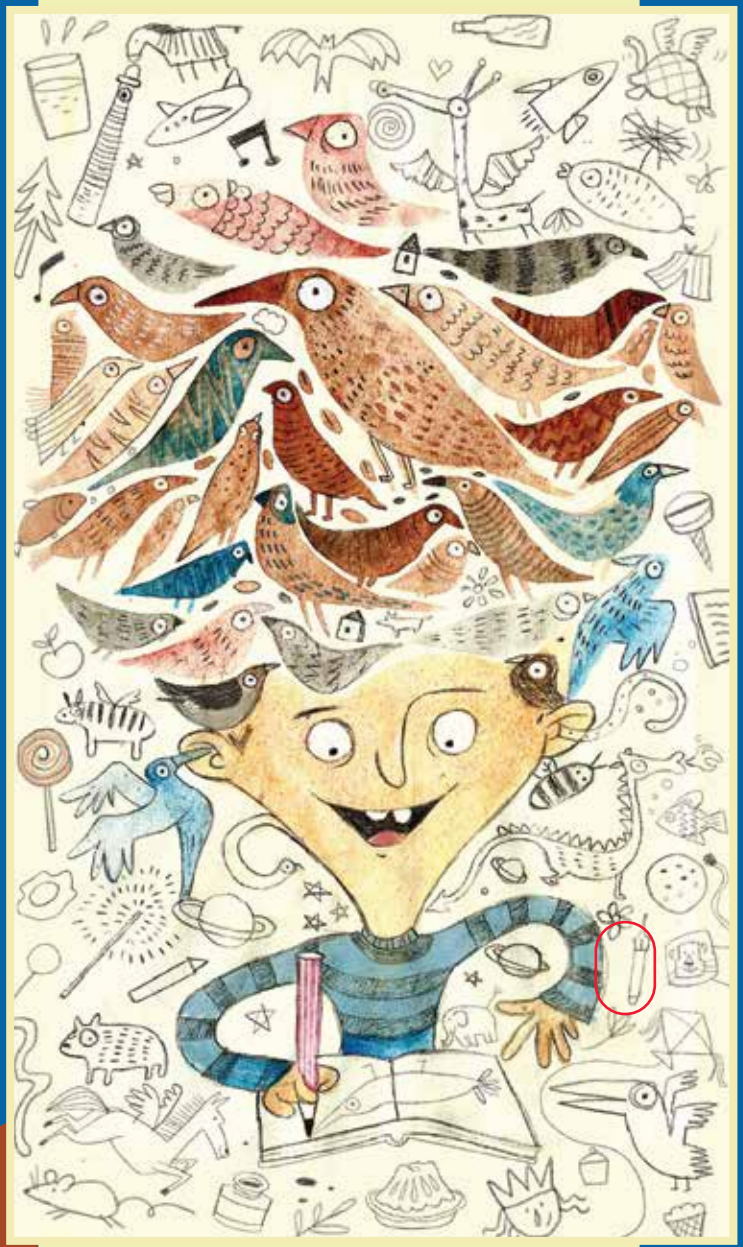

चित्र: प्रिया कुरियन

बरसात में खेत का अनुभव

अजीत कुमार
पाँचवीं, पोखरामा फाउंडेशन अकैडमी
लखीसराय, पोखरामा, बिहार

बरसात का मौसम चल रहा था। आज रविवार था। मेरे स्कूल की छुट्टी थी और मैं अपने पापा के साथ खेत जाने वाला था। क्योंकि मेरे खेत के पास एक पेड़ आँधी के कारण गिरा हुआ था। हम दोनों खाना खाकर खेत के लिए रवाना हुए। खेत जाते समय बारिश की झांसी (हल्की फुहार) चल रही थी। झांसी के कारण आगे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। और झांसी से मैं और पापा गीले हो गए थे। जब मैं एक पेड़ के नीचे पहुँचा तो वहाँ हवा चलने लगी। इससे मुझे ठण्ड लगने लगी। फिर जब मैं खेत पहुँचा तो बारिश और तेज़ होने लगी।

हम जल्दी से ताड़ के एक पेड़ के नीचे गए। वहाँ बारिश थोड़ी कम हो रही थी। अचानक से बिजली कड़की और पास के एक नारियल के पेड़ पर गिरी। पेड़ जल गया। यह आवाज़ सुनते ही मेरे कान खड़े हो गए। मैं और पापा जब वहाँ गए तो उस पेड़ से कुछ दूरी पर नारियल गिरे हुए थे। मैं और पापा जल्दी से गिरे हुए पेड़ को काटे और बाँधे। फिर कुछ गिरे हुए नारियल लेकर घर को आ गए। क्योंकि मौसम और बिगड़ रहा था।

चित्र: अनुराग कुमार, ग्यारह साल, पटना, बिहार

चित्र: निहिरा, पाँचवीं, सरिस्का, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

चित्र: सपना, पहली, सावित्रीबाई फुले फातिमा शेख लाइब्रेरी, भोपाल, मध्य प्रदेश

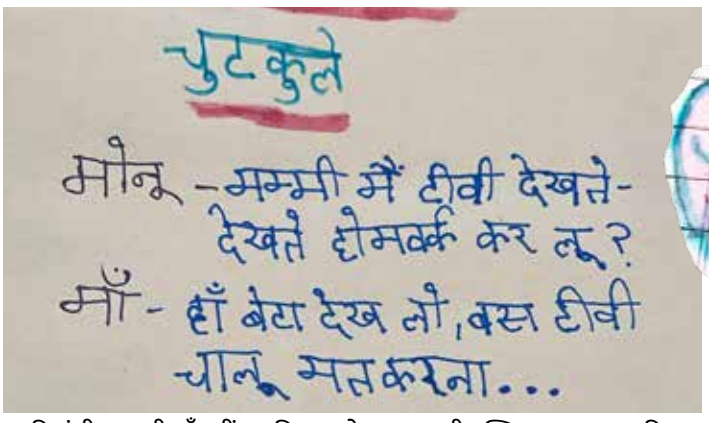

हिमांशी लखानी, पाँचवीं, नवनिध हासोमल लखानी पब्लिक स्कूल सन्त हिरदाराम नगर, भोपाल, मध्य प्रदेश

सिर्फ चाबी

चित्र व लेख: कविता
आठवीं, न्यू लर्निंग सेंटर, रायपुर, छत्तीसगढ़

14 सितम्बर को हमने न्यू लर्निंग सेंटर में पेलेस्टाइन पर वर्कशॉप की। उस वर्कशॉप में मैंने अपने साथियों के साथ यह जाना कि वहाँ क्या हो रहा है। मैंने वहाँ के मशहूर खाने, कपड़ों, डांस आदि के बारे में भी जाना। फिर मैंने पेलेस्टाइन की ड्राइंग बनाई। इसमें मैंने चाबी की भी ड्राइंग बनाई है। चाबी का मतलब यह है कि वहाँ के लोगों को उनके घर से भगाया गया है। और वो फिर से वापस आएँगे यह सोचकर वो ताला लगा देते हैं। लेकिन अभी उनके घर टूट चुके हैं। अब उनके पास सिर्फ चाबी ही रह गई है।

चित्र: हर्षित, ओरानिया वोकेशनल सेंटर (द मोटिवेशन चाइल्ड एंड एडोलसेंट डेवल्पेमेंट सेंटर, नोएडा, उत्तर प्रदेश से प्राप्त)

बिहार की बाढ़

अंकित कुमार
पाँचवीं, पोखरामा अकैडमी फाउंडेशन, पोखरामा, लखीसराय, बिहार

बिहार के दक्षिण इलाके में बाढ़ आने के कारण बहुत सारे घर ध्वस्त हो गए। इसके कारण बहुत सारे लोग बाढ़ में बह गए। अमीर लोग फिर से अपना घर बना लेंगे। लेकिन गरीब लोग अपना घर कैसे बनाएँगे। सरकार को सोचना चाहिए उनके बारे में।

एक ज़रूरी समाचार

रिद्धि कपूर
चौथी, सरिस्का, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

2022 से रशिया और यूक्रेन में युद्ध चल रहा है। इसमें लाखों लोग मारे जा चुके हैं। पूरी दुनिया इस युद्ध के अन्त होने का इन्तज़ार कर रही है।

दो साल हो चुके हैं। परन्तु यह लड़ाई खतम ही नहीं हो रही है। मैं इस बात से बहुत दुखी हूँ।

हर रोज़ मैं यह सोचती हूँ कि कब यह युद्ध खतम होगा। युद्ध में रशिया और यूक्रेन दोनों का नुकसान हो रहा है।

मैं यह प्रार्थना करती हूँ कि यह युद्ध खतम हो जाए और विश्व में शान्ति फैल जाए।

चित्र: शाम्भवी, यूकेजी, मदर टेरेसा स्कूल, कानपुर, उत्तर प्रदेश

चित्र: कोमल बोरा, ग्यारहवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

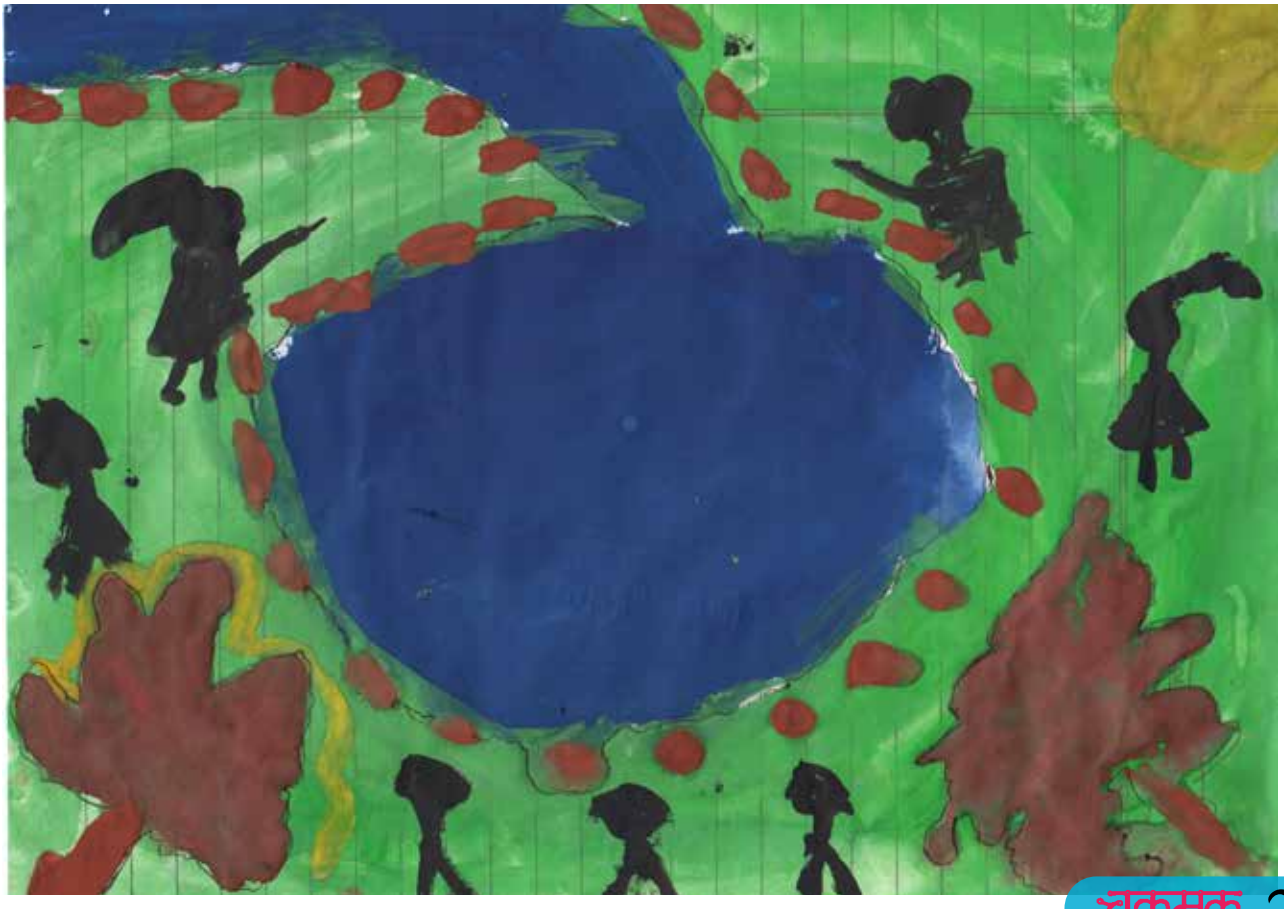

चित्र पहेली -1

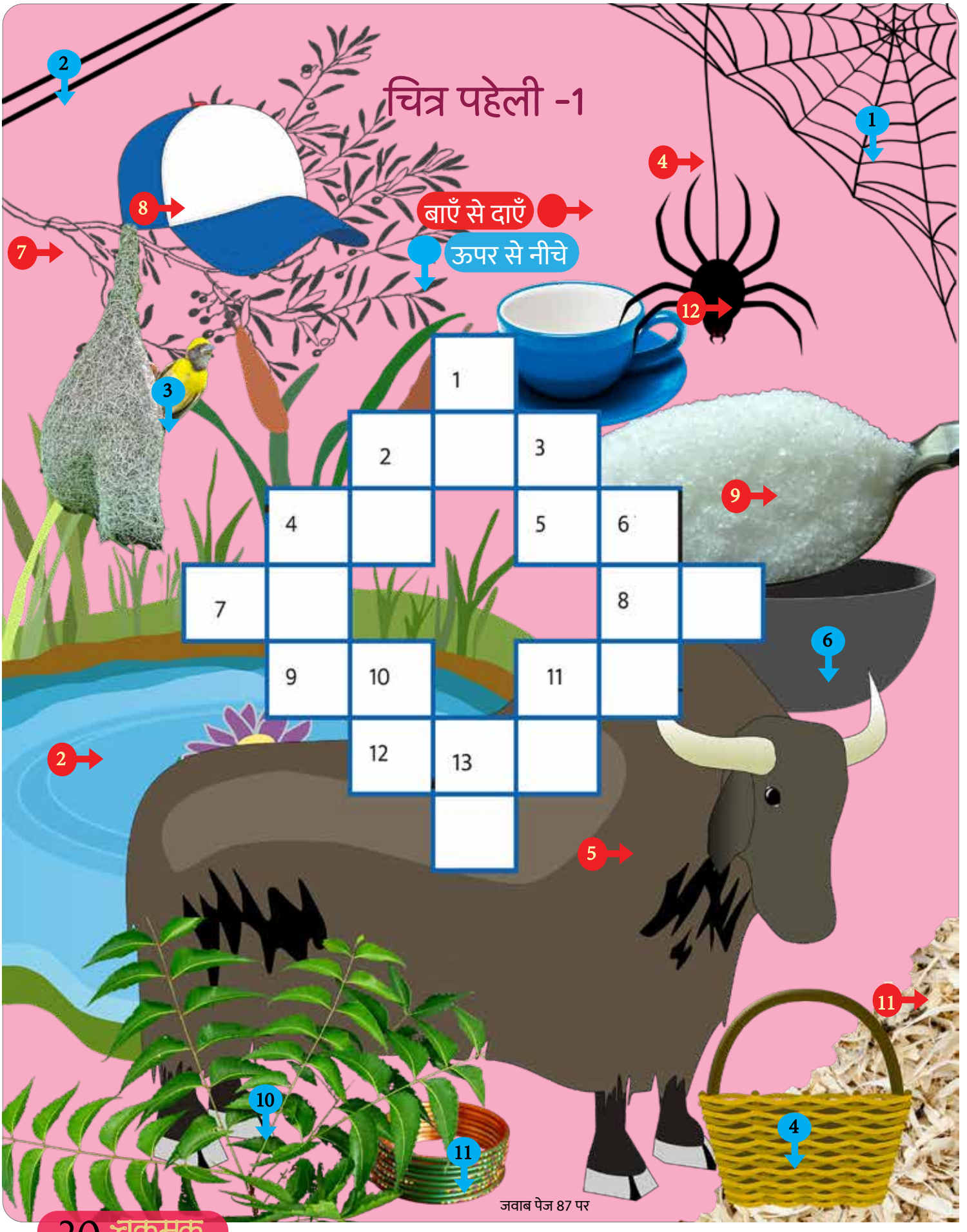

जवाब पेज 87 पर

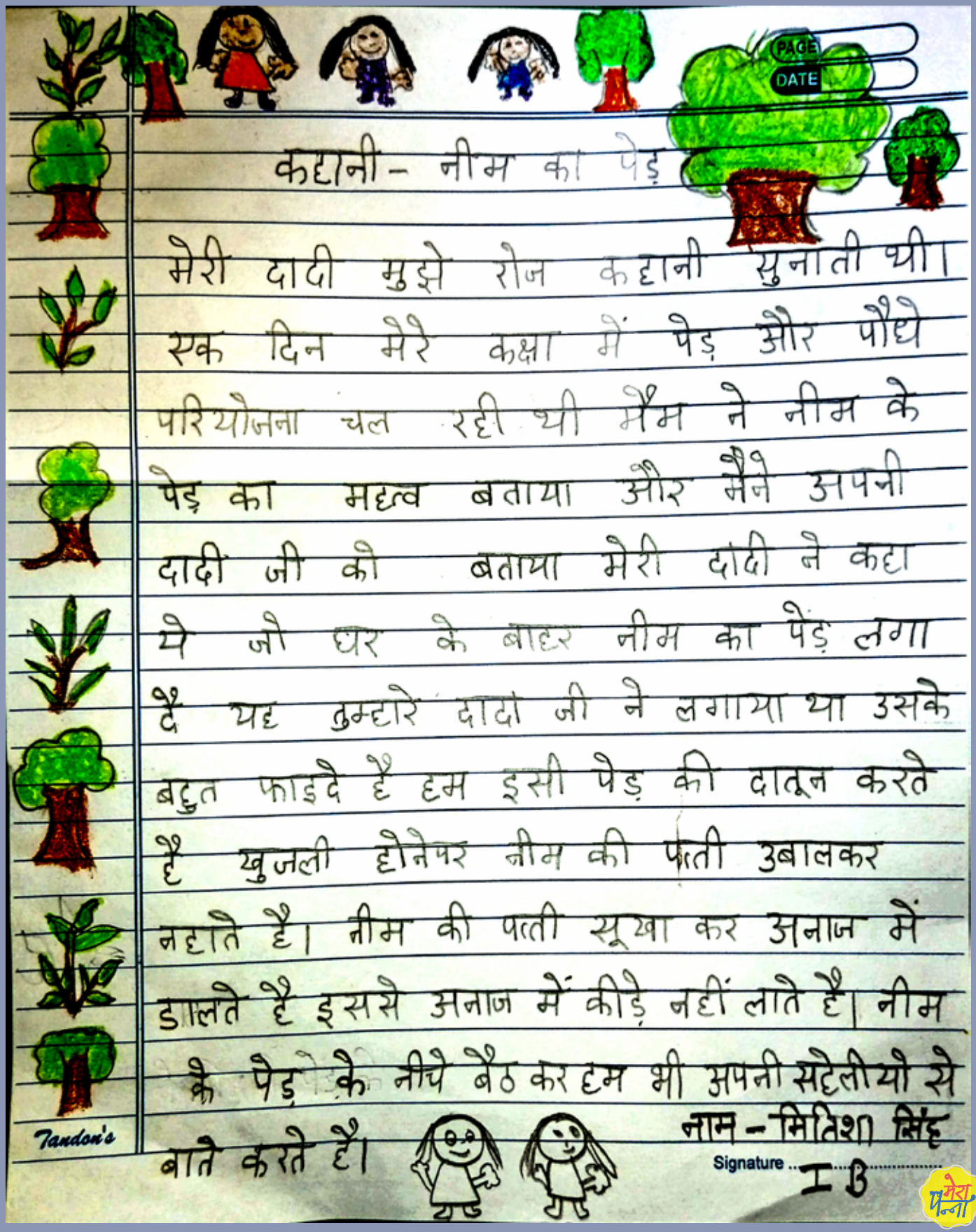

कहानी व चित्र: मितिशा सिंह, पहली 'बी', यश विद्या मन्दिर, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

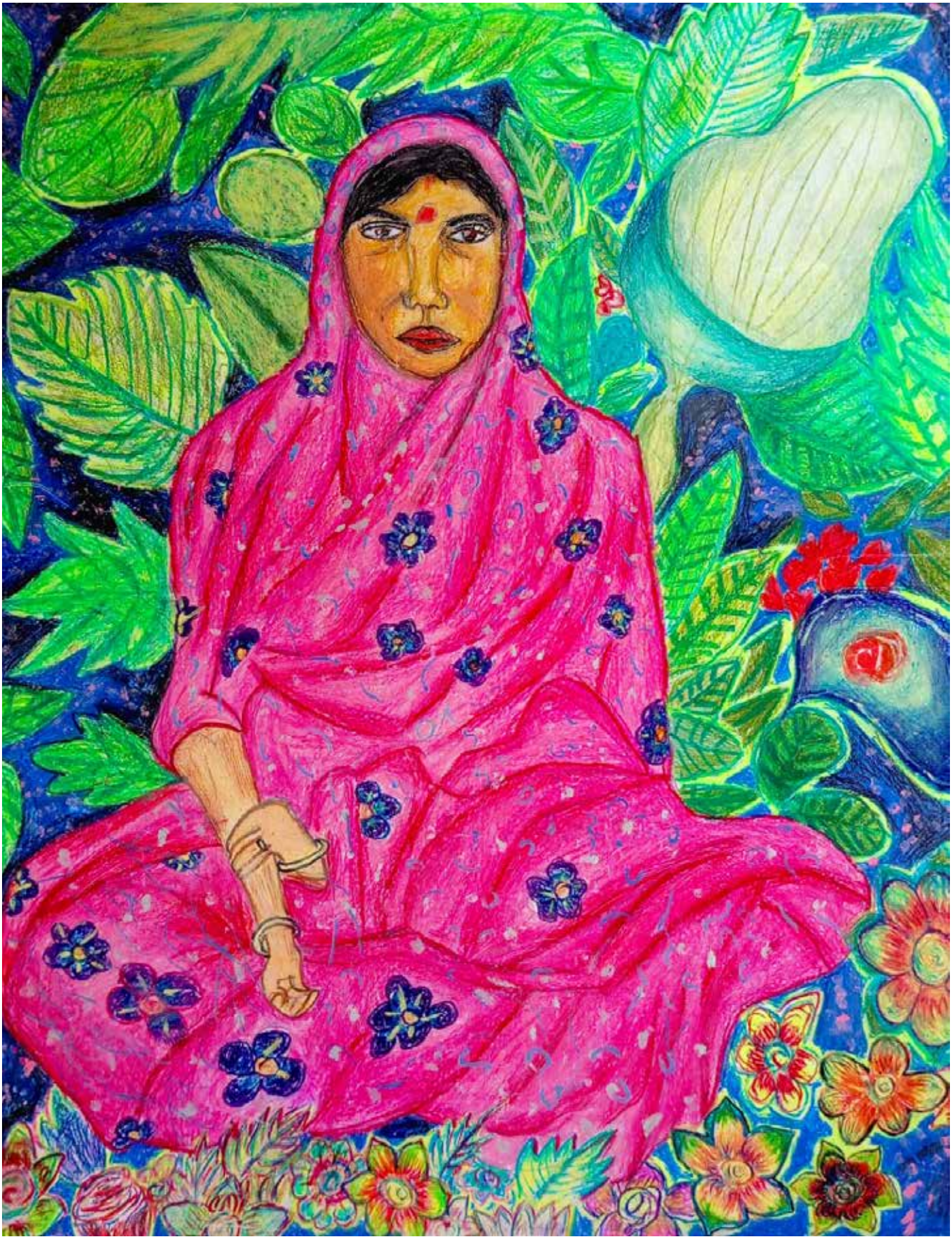

चित्र: आदित्य बाजवान, सातवीं 'ए', दिल्ली पुलिस पब्लिक स्कूल, वज़ीराबाद, दिल्ली

केशू और झांझी

मानवी
तीसरी, प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश

नवरात्रि आने से पहले हमारे गाँव में लड़के केशू और लड़कियाँ झांझी बनाते हैं। झांझी बनाने के लिए हम चिकनी मिट्टी पानी में मिलाते हैं। इससे मिट्टी गीली हो जाती है। फिर एक कटोरी पर चूल्हे की थोड़ी-सी राख रखकर मिट्टी को कटोरी पर रखते हैं। मिट्टी को कटोरी पर फैला देते हैं। इससे झांझी बन जाती है। झांझी दो दिन में सूख जाती है।

लड़के केशू बनाने के लिए समान आकार की तीन लकड़ियाँ लेते हैं और उन्हें बाँध लेते हैं। उसके बाद उस पर गोल आकार में मिट्टी लगा देते हैं और उसमें दिया या मोमबत्ती रखने के लिए जगह बना देते हैं। फिर उसे सूखने के लिए छोड़ देते हैं।

जब नवरात्रि शुरू हो जाती हैं तो रोज़ शाम को लड़कियों की टोली झांझी में और लड़के केशू में दिया या मोमबत्ती रखकर, थैला लटकाकर झांझी और केशू माँगने चल देते हैं। किसी भी घर जाकर लड़कियाँ गीत गाती हैं—

मैं नदी-नदी जाऊँगी
चिकनी मिट्टी लाऊँगी
मेरा पैर फिसले, झाँझी फूटे
घर-घर, घर-घर जाऊँगी

लड़के केशू माँगने जाते हैं और गाते हैं—

एक बन्दर ने शीशा पाया
उसे देखकर तगड़ी लाया
तगड़ी बाँधी उल्टी-सीधी
हम तो बन गए पूरे डिप्टी
डिप्टी साहब ने रेल चलाई
रेल चली झटके से
अनाज लाओ फटके से

जब बच्चे किसी घर के सामने जाकर गीत गाते हैं तो उस घर के बड़े लोग बाहर आकर वहाँ आए हुए बच्चों को अनाज (गेंहूँ, चावल और मक्का) देते हैं। उसे हम अपने घर से लाए हुए थैलों में रखते रहते हैं। बहुत सारे लोग हमें टॉफी और कुछ लोग पैसे भी देते हैं। कभी-कभी कुछ लोग यह कहकर हमें भेज देते हैं कि कल पैसे लेना। लेकिन अगले दिन वह हमको पैसे नहीं देते हैं। हम नवरात्रि के नौ दिन तक ऐसा करते हैं। अनाज भरे हुए थैले को हम घर ले जाते हैं। बहुत सारे लोग उसका दलिया पिसवा लेते हैं। कुछ सीधा जानवरों को खिला देते हैं और कुछ दुकान पर बेच देते हैं। अब केवल दो दिन बचे हैं।

अविराज
4-R

डायनासौर गेम
डायनासौर की उसके अंडों की मिलवाए!

भूलभुलैया -1

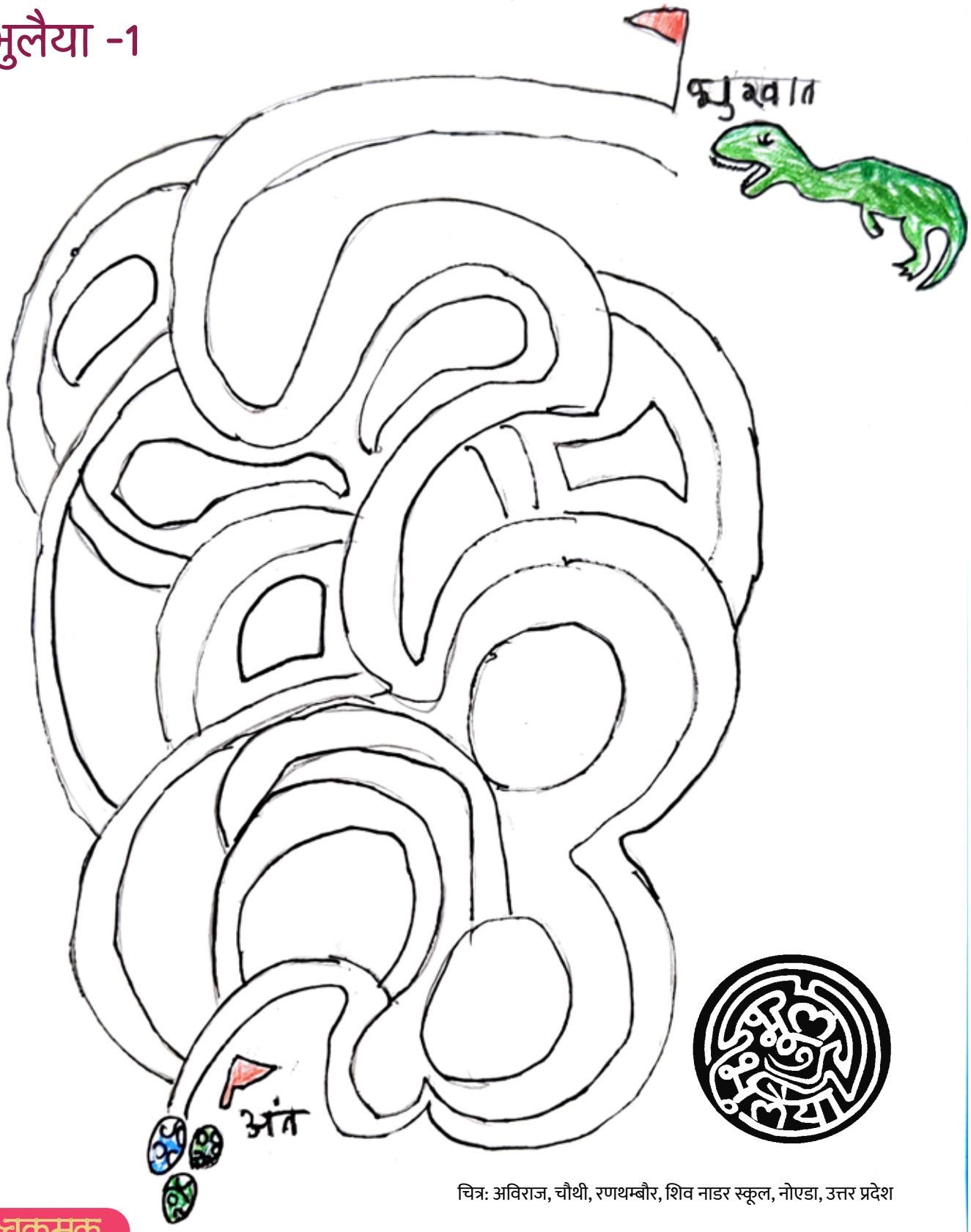

चित्र: अविराज, चौथी, रणथम्बौर, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

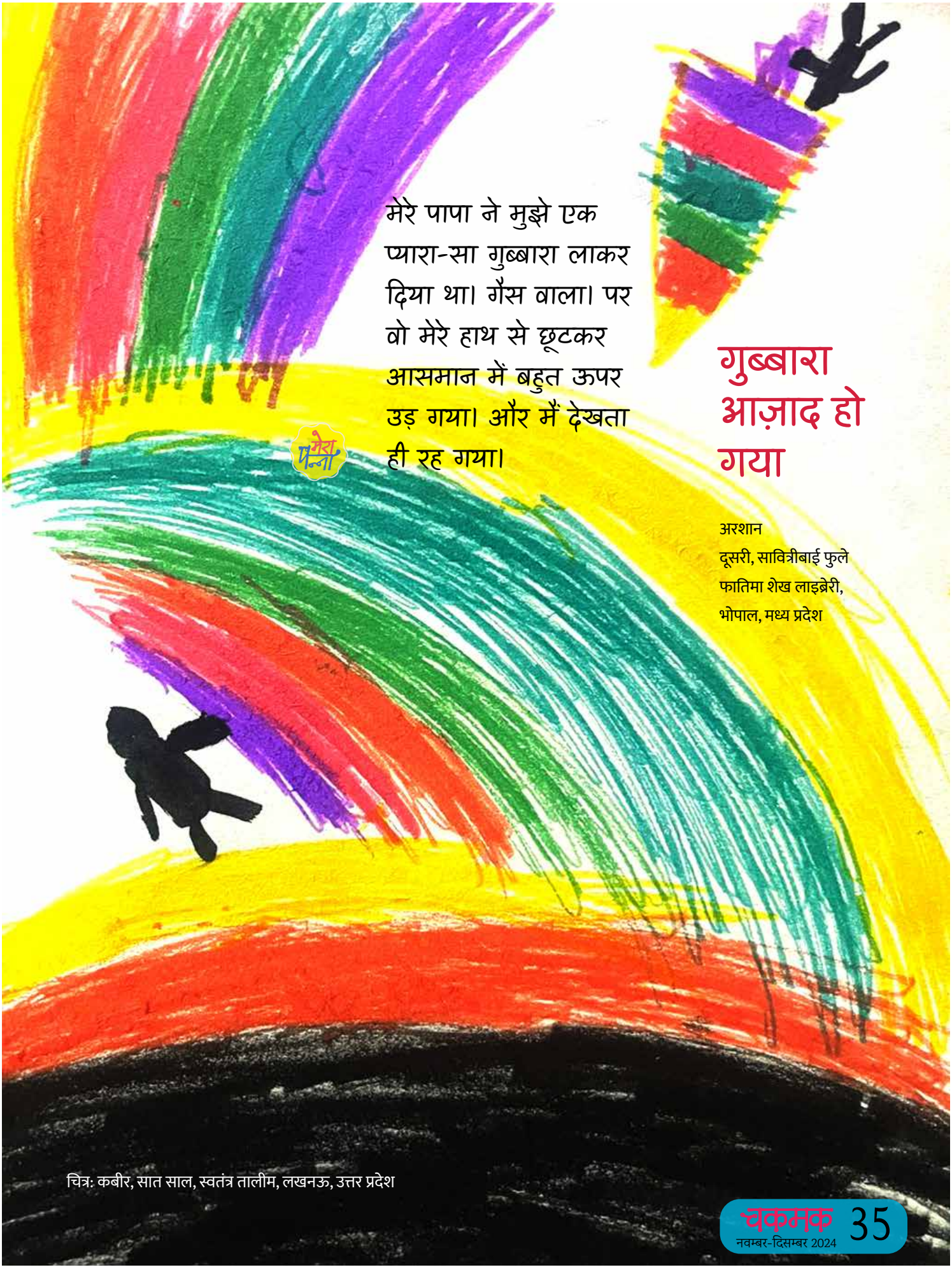

गुब्बारा आज़ाद हो गया

अरशान
दूसरी, सावित्रीबाई फुले फातिमा शेख लाइब्रेरी, भोपाल, मध्य प्रदेश

मेरे पापा ने मुझे एक प्यारा-सा गुब्बारा लाकर दिया था। गैस वाला। पर वो मेरे हाथ से छूटकर आसमान में बहुत ऊपर उड़ गया। और मैं देखता ही रह गया।

चित्र: कबीर, सात साल, स्वतंत्र तालीम, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

चन्दू चैम्पियन

निर्देशक: कबीर खान
निर्माता: साजिद नाडियाडवाला
रिलीज़ तारीख: 14 जून, 2024
समीक्षा: योग्य आनन्द, चौथी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

कुछ दिनों पहले मैंने फिल्म *चन्दू चैम्पियन* देखी। फिल्म में मैंने देखा कि कैसे चन्दू ने अपनी शारीरिक चुनौतियों के बावजूद अपने मज़बूत इरादों से खुद को बदल लिया। चन्दू ने पैराम्पलिक्स में भाग लिया और अन्य लोगों को भी प्रेरित किया।

एंडगेम

निर्देशक: एंथोनी रुसो, जो रूसो
रिलीज़ तारीख: 26 अप्रैल, 2019
निर्माता: केविन फीगे
समीक्षा: सत्यम कुमार, आठवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

अन्त आ गया। यूनिवर्स के एक और विलेन का अन्त आ गया, जिसका नाम था 'थानोस'। मार्वल द्वारा बनाई गई इस फिल्म का नाम *एंडगेम* है। यह फिल्म ठीक वहीं से शुरू होती है जहाँ पर *इंफिनिटी वॉर* खतम हुई थी। यह फिल्म पूरी तरह साइंस फिक्शन है।

फिल्म की शुरुआत से लेकर अन्त तक मेरी नज़र स्क्रीन से हटी नहीं। मगर इस फिल्म में मुझे बहुत दोहराव-सा लगा। इसमें ऐसे कई सीन हैं जो *इंफिनिटी वॉर* में भी थे, जैसे थानोस से गौंटलेट छीलने का दृश्य। यह एक ऐसी फिक्शन फिल्म है जिसमें डॉक्टर स्ट्रेंज के एक इशारे से पूरा गेम पलट गया। यह बात मुझे बहुत पसन्द आई।

कुछ हास्यास्पद पत्रों को हटाना चाहिए जैसे कैप्टन मार्वल क्योंकि वह शुरुआत में थी। मगर बिना किसी कारण से वह बाहर हो गई और फिल्म के अन्त में वह दोबारा आ जाती है।

सिर्फ स्टार लॉर्ड की एक छोटी-सी गलती की वजह से हमने इस फिल्म में अपने चहेते किरदारों को खोया है, जैसे आयरन मैन और कैप्टन अमेरिका।

एंडगेम के नाम के मुताबिक इस फिल्म में कई लोगों का अन्त

उसके बाद मैंने पैरालम्पिक्स 2024 के कुछ प्रदर्शन भी देखे और मैं दंग रह गया। वहाँ भी मैंने देखा कि खिलाड़ियों ने अपनी शारीरिक कमज़ोरियों के बावजूद अपनी मेहनत और हिम्मत से बड़े-बड़े लक्ष्य प्राप्त किए। यह सब देखकर मैंने ठान लिया कि मैं भी अपनी मानसिक ताकत से खुद में और अपने आसपास बदलाव लाऊँगा।

अगले ही दिन जब मुझे गणित का एक सवाल कठिन लगा तो मैंने हार नहीं मानी जब तक कि उसका हल नहीं मिला। जब मेरे एक दोस्त को पढ़ने में मुश्किल हुई तो मैंने उसे हिम्मत दी और उसकी मदद करी। इन अनुभवों से मैंने समझा कि सच्ची ताकत हमारे शरीर में नहीं, बल्कि हमारे मन में होती है। जिससे हम खुद को और अपने आसपास की दुनिया को बेहतर बना सकते हैं।

हुआ जैसे थानोस, आयरन मैन, लोकी आदि। मगर किसी एक चीज़ का अन्त होते ही दूसरी चीज़ की शुरुआत होती है, ठीक उसी तरह इस *एंडगेम* के बाद कई नए अवेंजर्स का चेहरा सामने उभरकर आया है। इनमें सबसे बड़ा नाम हॉकाई का है। *एंडगेम* से पहले उसके प्रशंसक बहुत कम थे, मगर उसकी *इंफिनिटी वॉर* में अनुपस्थिति और *इंफिनिटी वॉर* हारने से हॉकाई का महत्व बढ़ गया और उसने *एंडगेम* में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया।

एक फिल्म समीक्षक की नज़र से *एंडगेम* में कुछ गड़बड़ है। लेकिन एक कॉमिक बुक और मार्वल सिनेमैटिक यूनिवर्स प्रशंसक के रूप में फिल्म विषयगत रूप से एकदम सही है। यह फिल्म हमें वीरता, साहस और सामूहिक भलाई के बारे में सिखाती है।

पाइरेट्स ऑफ द कैरेबियन: आन स्ट्रेंज टाइड

निर्देशक: जेरी ब्रुकहीमर

रिलीज़ तारीख: 20 मई, 2011

समीक्षा: वरुण देव, नौवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

मनोरंजन और रोमांच से भरपूर यह मूवी जॉनी डीप के द्वारा निभाए गए किरदार जैक स्पैरो के रूप में पूरे विश्व भर में विख्यात है। मूवी में जैक स्पैरो नाम का एक समुद्री लुटेरा है जो समुद्र का सबसे बड़ा ठग है। वो बोलने में नहीं, बल्कि करके दिखाने में विश्वास रखता है। वह दिखाता कुछ और है और करता कुछ और। जो चीज़ उसे सबसे ज़्यादा खास और बाकियों से अलग बनाती है वह है उसका चालाक दिमाग। वह मुश्किल परिस्थितियों में अपने दिमाग का इस्तेमाल करके वहाँ से निकल जाता है। वह आपने साहस के लिए जाना जाता है। उसे ना तो मौत का डर है ना कुछ पाने की लालसा। उसे हमेशा समुद्र में खोए रहना पसन्द है। जॉनी डीप ने इस किरदार को इतने अच्छे तरीके से निभाया है कि वह सबकी पसन्द बन चुका है।

तेंदूपत्ता तोड़ना

दुर्गा पोड़ियामी
चित्र: नीलेश गहलोत

तब मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती थी। गर्मियों के दिन थे। हमारे गाँव में पत्ता तोड़ना बन्द हो गया था। मेरे पापा गाड़ी चलाने जाते थे। एक दिन हमारे घर में बुआ आईं। वो बोलीं, “एटेगट्टा जाओगे क्या? उधर बहुत पत्ता तोड़ रहे हैं। अभी और एक सप्ताह पत्ता तोड़ेंगे।” मुझे तो डर लग रहा था। लेकिन मेरी छोटी बहन तैयार हो गई थी। मैं सोची, “मैं अकेली घर पर क्या करूँगी।” इसलिए मैं भी तैयार हो गई। मेरा महीना चल रहा था। तो मैं बुआ को पूछी, “बुआ मेरा डेट आया है, मैं क्या करूँ?” बुआ बोलीं, “तुम्हारी राखी दीदी का भी डेट आया है पर वो जा रही है। तू भी जा, कुछ नहीं होगा।” राखी दीदी बुआ की बेटी थीं। मुझे डर लग रहा था क्योंकि पापा से बिना पूछे जा रहे थे।

हम लोगों को रामा भैया एटेगट्टा छोड़ दिया। एटेगट्टा गाँव कोंटा में है। उधर बहुत जंगल है। हम लोग जंगल के रास्ते गए। मेरे को बहुत डर लग रहा था क्योंकि जंगल बहुत घना है। गाँव पहुँचकर हम लोग बुआ के घर गए। अपना सामान रखा और सीधे जंगल गए। रामा भैया हमें घर छोड़कर वापिस गाँव चले गए। हम लोग जंगल जाने के बाद बुआ, मामा सब से मिले। सब पत्ता

दुर्गा, नौवीं, स्वामी आत्मानन्द हिन्दी माध्यम स्कूल, झापरा, सुकमा, छत्तीसगढ़

तोड़ रहे थे। पहला दिन था। इसलिए पत्ता तोड़ने में डर लग रहा था। वहाँ पर चाची की बेटी प्रिया दीदी पहले से ही आई थीं। फिर उनके साथ मेरी बहन और मैंने पत्ता तोड़ना शुरू किया। पत्ता तोड़ने का भी एक नियम जैसा होता है। एक बण्डल में 50 पत्ते होने चाहिए – 25 एक तरफ और 25 दूसरी तरफ। फिर रस्सी बाँधना होती है। एक बण्डल का भाव 5 रुपए है। तो मैं और मेरी बहन पहले दिन 100 बण्डल तोड़े।

फिर बुआ सबको बुलाईं, "खाना खाने आओ।" सब लोग खाना खाने गए। मेरे को अलग-से खाना निकालकर दिए क्योंकि मेरा डेट आया हुआ था। लेकिन सब साथ बैठकर खाना खाए। खाना खाते-खाते मैं बुआ से पूछी, "पत्ता तोड़ने से क्या होता है? पत्ते का क्या करते हैं?" बुआ बोलीं, "हम लोग पत्ता तोड़कर बेचते हैं। तभी हम लोगों को पैसा मिलता है। पत्ता हम लोगों को खुद सुखाना पड़ता है। सूखने के बाद पत्ता को बोरी में डालते हैं और ले जाते हैं।" मैं फिर पूछी, "ले जाने के बाद क्या करते हैं?" बुआ ने बताया, "पत्ता को ले जाकर बीड़ी बनाते हैं। बीड़ी बनाकर बेचते हैं।" मैंने फिर से पूछा, "तेंदूपत्ता को ही क्यों बेचते हैं?" "क्योंकि तेंदूपत्ता से ही बीड़ी बनता है", बुआ बोलीं। "पहले तू खाना खा, फिर पूछना।"

लेकिन मेरे को जानना था इसलिए मैं फिर पूछी, "तेंदूपत्ता से बस बीड़ी बनाते हैं, और कुछ नहीं?" बुआ बोलीं, "तेंदूपत्ता से सब बनता है – पत्तल, धोना (दोना), पानी पीने के लिए। तेंदूपत्ते का दातुन भी करते हैं।" बात करते-करते बहुत ज़्यादा समय हो गया था। थोड़ी देर हम आराम किए और फिर पत्ता तोड़ने चले गए।

नन्हा तोता

गरमीयों की छुट्टियां थी। मैं अपनी नानी के घर गई हुई थी। कुछ दिन बीत गए, फिर एक दिन ऐसा आया जब मैं सुबह सोकर उठी, तो मुझे तोते की "चीं-चीं" सुनी। मैंने बाहर जाकर देखा तो मैंने बहुत सारे तोते उड़ते हुए देखे। घर के बाहर एक कोने में एक झाड़ी थी, झाड़ी के बीच में, बहुत अंदर, एक छोटा तोता बैठा था। शायद वह उड़ नहीं पा रहा था जिस वजह से बाकी सभी तोते उसकी मदद करने की कोशिश कर रहे थे। मुझे उस पर बहुत तरस आया।

मुझे सिर्फ यह पता था कि सभी तोतों को मिर्च अच्छी लगती है। तो मैं एक हरी मिर्च ले आई और उसकी चोंच के सामने ले गई। उसने सिर्फ एक बार ही मिर्च को काटा। मुझे लगा उसे भूख नहीं प्यास लगी है। तो मैं एक कड़छी में पानी ले आई। उसने थोड़ा पानी पीया। पानी पीने के बाद में वह उसी कड़छी की डंडी पर बैठ गया। मैं बहुत उत्सुक हुई और मैंने अपनी माँ को बुलाया। माँ ने बोला कि कड़छी को धीरे से नीचे रखो और जैसे ही मैंने उसे नीचे रखा तब वह छोटा तोता फुर्र से उड़ गया। यह देखकर मेरा मन उत्साह से भर गया। मैं उस नन्हे तोते के लिए बहुत प्रसन्न हुई।

हमें बहुत अच्छा लगा क्योंकि हमने उस नन्हे तोते की उड़ने में मदद की। वह झाड़ियों में डरकर बैठा हुआ था, और उन झाड़ियों में बहुत काँटे भी थे जिनकि वजह से वह वहाँ फस गया था। पर जैसे ही वह उड़ा, खुशी से जाकर अपने सभी साथियों से जा मिला।

मेरा पन्ना

अवनि धीमान, पाँचवीं, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल, चंगलपेट, तमिलनाडु

चित्र: रितम भौमिक, कोलकाता बाल भवन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

चित्र: अंश शर्मा, कोलकाता बाल भवन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

1. दो संख्याएँ ऐसी हैं जिन्हें गुणा करने पर एक अंकीय संख्या मिलती है और जोड़ने पर दो अंकीय। कौन-सी संख्याएँ हैं वो?

2. क्या तुम केवल एक अंक को इधर-उधर कर इस सवाल को सही कर सकते हो?

101–102 = 1

3. तुम्हें इस चित्र को बनाना है, मगर बिना पैन/पैंसिल उठाए, बिना किसी रेखा को क्रॉस किए और बिना किसी भी रेखा को दोबारा खींचे। इसके लिए तुम्हें कोई तरकीब की ज़रूरत नहीं है। इसे एक ही रेखा से बना सकते हैं।

4. इस चित्र में तुम्हें कितने चौकोर दिखाई दे रहे हैं?

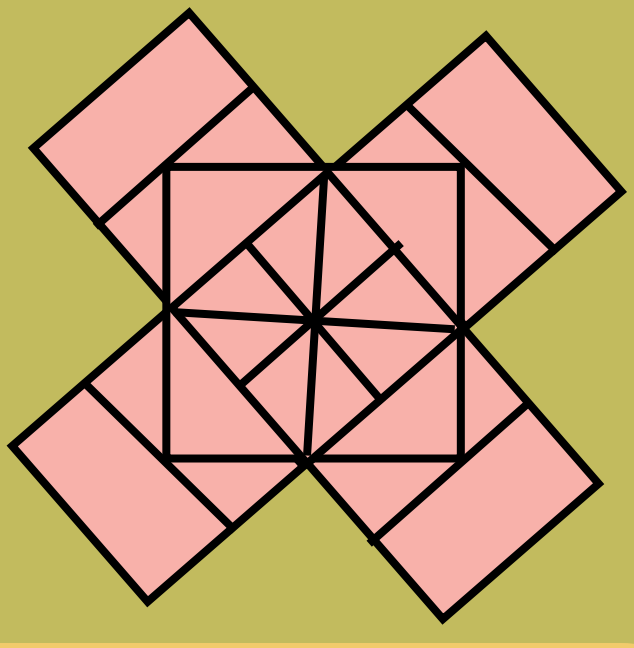

5. अपने जानवरों के बारे में पूछे गए सवाल के जवाब में एक किसान कहता है, “मैं हमेशा भेड़, बकरियाँ और घोड़े ही रखता हूँ। इस समय मेरे पास तीन को छोड़कर सभी भेड़ें हैं, चार को छोड़कर सभी बकरियाँ हैं, और पाँच को छोड़कर सभी घोड़े हैं।” बताओ किसान के पास हरेक जानवर कितनी संख्या में है?

6. दी गई ग्रिड में कई सारे त्यौहारों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

का	दी	द	पों	ग	ल	ज
मा	वा	श	दो	ई	मा	न्मा
हो	ली	ह	स	द	क	ष्ट
मं	श	रा	म	न	व	मी
बै	सा	खी	की	ओ	छ	ठ
र	क्षा	ब	न्ध	ण	बि	हु
दी	र	क्रि	स	म	स	ध

यह पहेली तमिलनाडु के चंगलपेट ज़िले के महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल की चौथी कक्षा की छात्रा कायरा वेद ने भेजी है।

माथापच्ची

7. खाली जगहों में कौन-सी संख्याएँ आएँगी?

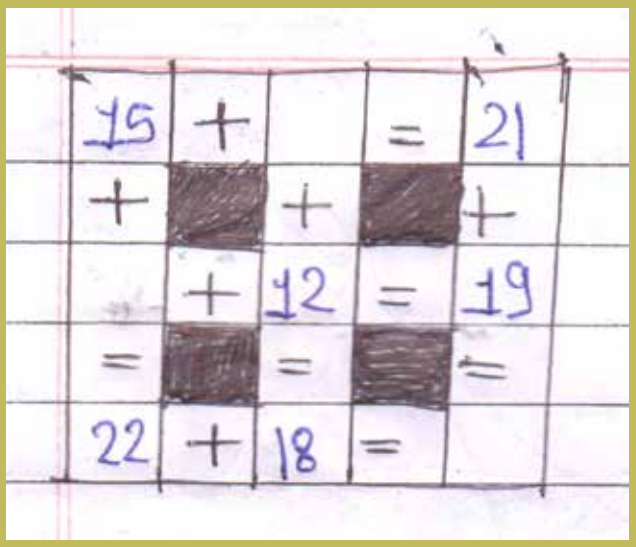

यह सवाल उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा ज़िले के कौसानी के लक्ष्मी आश्रम की दसवीं कक्षा की छात्रा प्रेमा आर्या ने भेजी है।

8.

फटाफट बताओ

मुझे बड़ी-सी बिल्डिंग से नीचे फेंक दो, मैं बच जाऊँगा।
लेकिन अगर
पानी में फेंकोगे तो मैं
मर जाऊँगा। मैं कौन हूँ?

(ह्ाणक)

कौन-सी चीज़ है जो खाने से पहले दिखती नहीं है?

(ग्कर्ठ)

हाथ में है, पैर में है
पर जीभ में नहीं,
बताओ क्या

(ड्डिह्र

यह दोनो पहेलियाँ हरयाणा के करनाल ज़िले के पाड़ा ग्राम के दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल की छठवीं की छात्रा मानवी ने भेजी हैं।

घर में रह रहे अकेले व्यक्ति से सीढ़ी क्या कहती है?

(एली र्फि र्तेम्री ाऌीट)

देखी रात अनोखी वर्षा
सारा खेत नहाया
पानी तो पूरा शुद्ध था
पर पी कोई न पाया

(म्रािह)

चित्र: प्रेमा आर्या, दसवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

जवाब पेज 86 पर

चादर

सोनम
चित्र: मयूख घोष

सोनम, भोपाल, मध्य प्रदेश

जब भी सर्दी का मौसम आता है, तो हवा की ठण्डी-ठण्डी लहर पूरे मोहल्ले में धुन्ध की तरह फैल जाती है। ऐसा लगता है कि हमारे चारों तरफ तीन बड़ी चादरें हों। एक है सफेद सूरज की किरणें जो आसमान में तम्बू जैसे तनी हैं। दूसरी है धरती की हरी चादर। जिस पर तरह-तरह के चित्र बने हैं, जैसे कि हरे पेड़-पौधे, मकान आदि। तीसरी चादर ठण्ड की जो सुबह और शाम में चारों तरफ फैलती है। कुछ ओस और नमी लिए हुई। ज़्यादातर यह चादर डराती है, कभी-कभी गुदगुदाती भी है।

जब इस चादर का एक हिस्सा हमारी बस्ती में आता तब मुझे मेरे माँ-बाबा और मोहल्ले की चिन्ता होती। क्योंकि हमारे यहाँ लोगों के पास चादर नहीं है, न ही ठण्ड से बचने के लिए गरमाहट भरा कम्बल। बस ठण्ड रुक जाए तो सब शाम को ठीक हो जाएँ। पर हम सब जानते हैं कि यह चादर जो ठण्ड से हमें बचा सकती है, घर में सब के पास मिल पाए ऐसा होना नामुमकिन है।

एक दिन जब मैं बीनने के लिए 11 मील गई थी, तो मैंने देखा कि एक बड़े-से तालाब के किनारे बड़े-बड़े बाँस के लट्ठे खड़े हुए थे। उनमें तरह-तरह की रंगीन और सफेद चादर, टॉवल, पजामा और साड़ियाँ सूख रही थीं। लग रहा था कि मैं सपना देख रही हूँ। मैं बहुत खुश हुई। मैं हर चादर के पास जाकर छूकर देख रही थी कि कहीं ये सपना तो नहीं है। वो चादर इतनी बड़ी थी कि माँ और बाबा मिलकर एक तम्बू बना लें तो बिछौना बन जाए। मुझे लग रहा था कि यह नज़ारा मैं अपने घर के लोगों को दिखाऊँ।

लेकिन क्या करती। मुझे तो केवल सुन्दर-सुन्दर दिखनेवाली चादर चाहिए थी। इसलिए मैंने केवल चार चादरों को रस्सी से उतारा और अपने कबाड़े के बोरे में अपने सपनों की सुन्दर चादर को भर लिया। अब मुझे ठण्ड नहीं लगेगी और मेरे माँ-बाबा की कड़ाके की ठण्ड जल्दी से गर्माहट में बदल जाएगी। यह सोचते हुए मैं घर चली गई।

तुम भी बनाओ

खूबसूरत वॉल हैंगिंग

श्रीधी राज
पाँचवीं, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल
चंगलपेट, तमिलनाडु

सामग्री: सफेद रंग की एक छोटी पेपर प्लेट, 4 पिस्ता के छिलके (2 छोटे, 2 बड़े), छोटी पत्तियाँ, काला स्कैच पैन, फेविकॉल, ऊन का 1 छोटा टुकड़ा।

विधिः पत्तियों को छोटे टुकड़ों में तोड़कर फेविकॉल की मदद से पेपर प्लेट के निचले भाग में चिपका लें। बड़े पिस्ते के छिलकों को चिपकाकर जिराफ का शरीर बना लें। और छोटे छिलकों को चिपकाकर उसका मुँह बना लें। काले स्केच पैन से जिराफ के शरीर के अन्य हिस्सों को बना लें। प्लेट के ऊपरी हिस्से में पत्तियों को चिपकाकर पेड़ की टहनियों का रूप दे दें। ऊन के टुकड़े को फेविकॉल की मदद से प्लेट के पिछले भाग में चिपकाकर टाँगने के लिए बना लें।

वेस्ट मटेरियल से गुड़िया

मेघा मकवाने
तीसरी, शासकीय प्राथमिक विद्यालय
झिरन्या, गुलावड़, खरगोन, मध्य प्रदेश

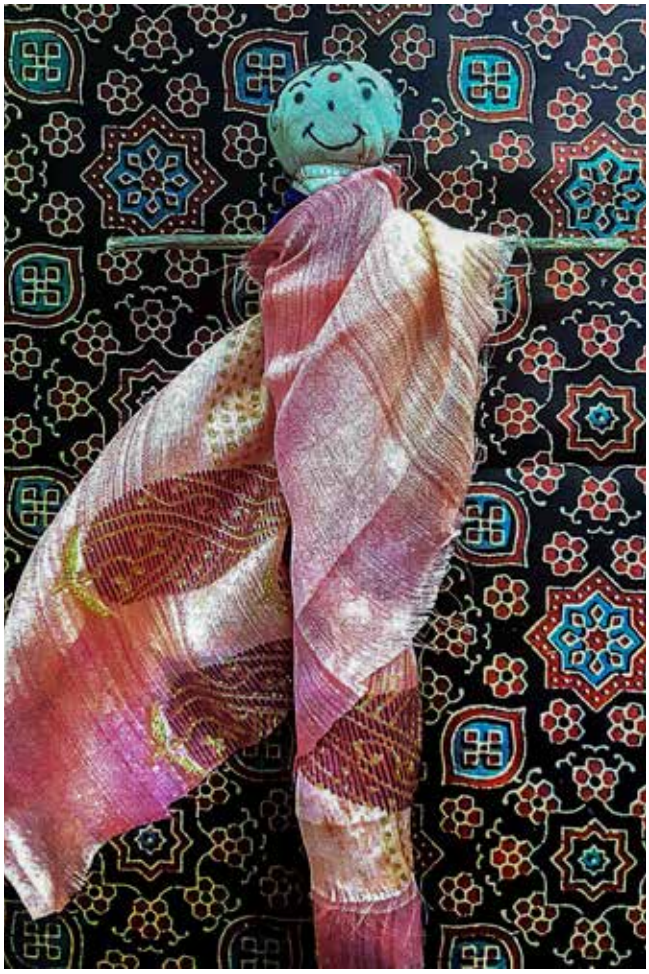

सामग्री: लकड़ी के दो टुकड़े, साड़ी के दो टुकड़े, कपड़े की कतरन, बिन्दी, पैन।

विधि: सबसे पहले हमने लकड़ी के दो टुकड़े लिए। उन्हें जोड़ के चिन्ह जैसा रखकर एक चिन्दी से बाँध दिया। फिर चौकोर कपड़ा लिया और उसमें कपड़े की कतरन डाली। और चिन्दी से गेंद की तरह लकड़ी के ऊपर बाँध दिया। इससे गुड़िया का चेहरा बन गया। फिर साड़ी का टुकड़ा लेकर लकड़ी के ऊपर लपेट दिया। पैन से चेहरे पर आँख, नाक, कान, होंठ, बाल बना दिए और माथे पर बिन्दी लगा दी।

तैयार हो गई 'मेरी गुड़िया'।

मैंने क्या किया

अनामिका विश्वास
सातवीं, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
धौलपुर, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

मैंने सबसे पहले एक गत्ता लिया। फिर मैंने गत्ते के ऊपर एक चार्ट चढ़ाया। उसके बाद मैंने उस पर काले रंग का एक पेड़ बनाया। फिर मैंने मूँगफली खाकर उसके छिलके को रंग किया। फिर मैंने उसे काले पेड़ में चिपका दिया। फिर मैंने अच्छे-से उस चार्ट को सजाया।

अब मेरा सुन्दर पेड़ तैयार हो गया।

चित्र: नेचिन वांगमु थोंगची, यूकेजी, किड्ज़ी प्रीस्कूल, दोइमुख, पापुम पारे, अरुणाचल प्रदेश

गाँव का इतिहास

जसोदा पाठक
दसवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी
अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

आज मैं अपने गाँव का इतिहास बताऊँगी। मेरे गाँव का नाम भट्टीगाँव है। मैंने ये प्रश्न अपनी दादी से पूछा था कि हमारे गाँव का नाम भट्टीगाँव क्यों पड़ा। तो दादी ने बताया कि पहले हमारे गाँव में बहुत भट्ट हुआ करते थे अधिकतर लोग भट्ट से बना भट्टी खाया करते थे। जिसे हिन्दी में डुबका कहा जाता है। हमारे गाँव में तो इसे भट्टी ही कहा जाता है। तभी से मुझे पता चला कि हमारे गाँव का नाम भट्टीगाँव क्यों पड़ा।

लखनऊ

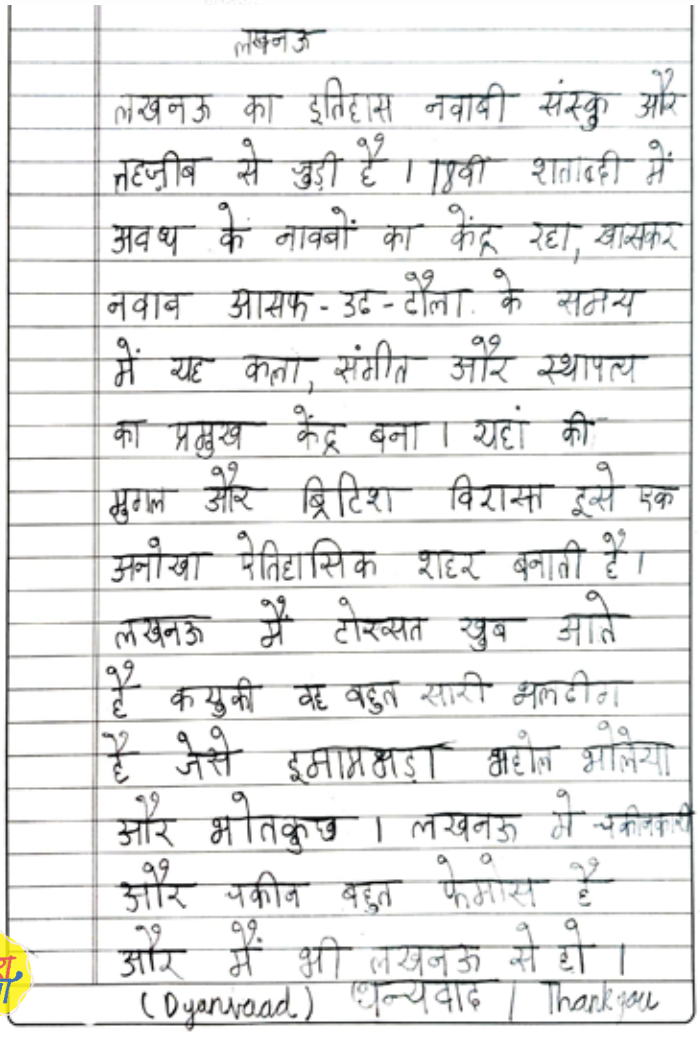

लखनऊ का इतिहास नवाबी संस्कृ और तहज़ीब से जुड़ी है। 18वी शताब्दी में अवध के नावबों का केंद्र रहा, खासकर नवाब आसफ-उद-दौला के समय में यह कला, संगीत और स्थापत्य का प्रमुख केंद्र बना। यहां की मुगल और ब्रिटिश विरासत इसे एक अनोखा ऐतिहासिक शहर बनाती है। लखनऊ मैं टोरस्त खुब आते है कयुकी वह बहुत सारी बिलदीन है जैसे इमामबाड़ा बहोल भोलैया और भीतकुछ। लखनऊ मे चकीनकारी और चकीन बहुत फेमोस है और मैं भी लखनऊ से हो।

(Dyanwaad) धन्यवाद / Thank you

रियाना, चौथी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

मेरा पन्ना

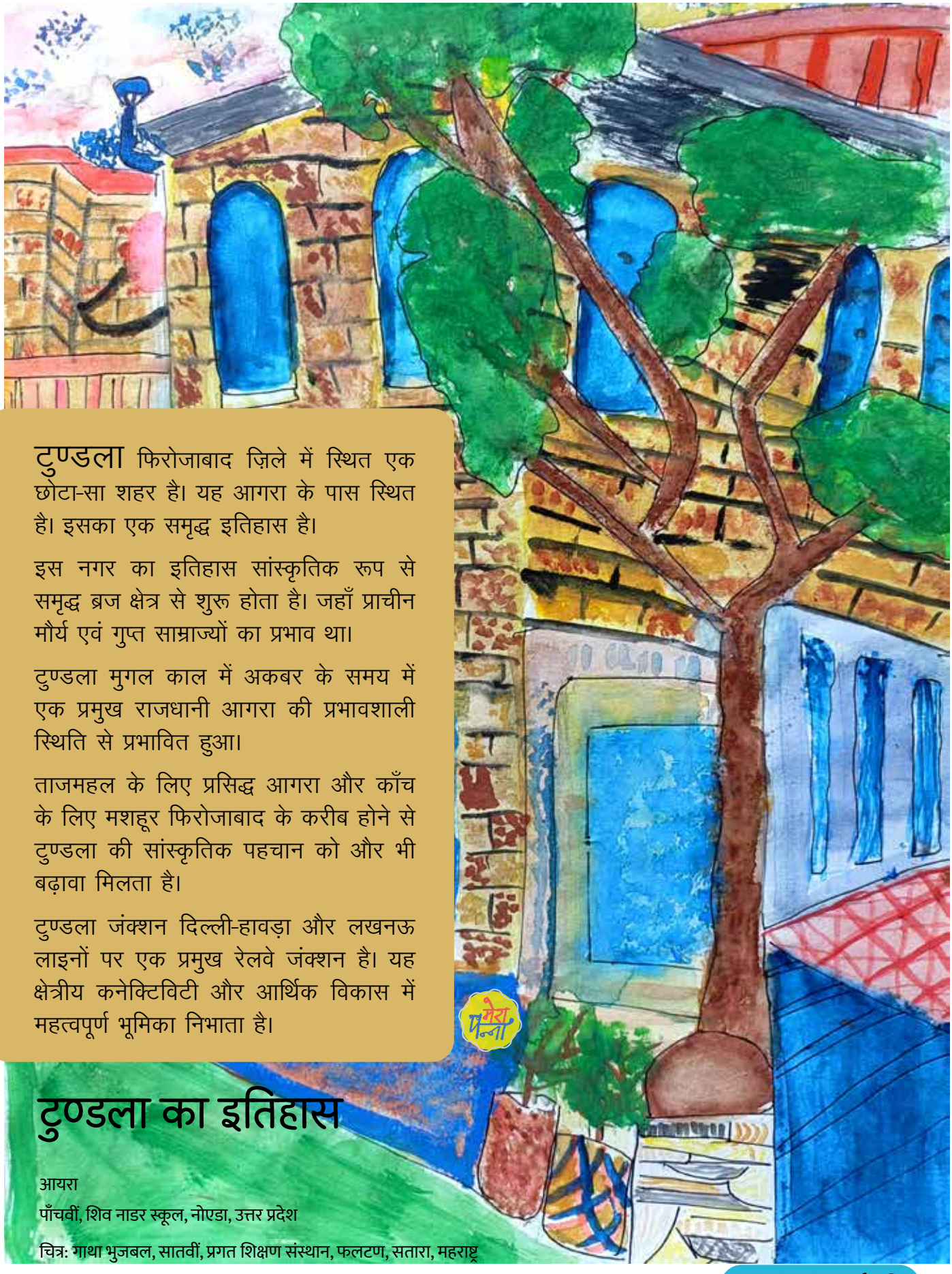

टुण्डला का इतिहास

आयरा
पाँचवीं, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

चित्र: गाथा भुजबल, सातवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

टुण्डला फिरोजाबाद ज़िले में स्थित एक छोटा-सा शहर है। यह आगरा के पास स्थित है। इसका एक समृद्ध इतिहास है।

इस नगर का इतिहास सांस्कृतिक रूप से समृद्ध ब्रज क्षेत्र से शुरू होता है। जहाँ प्राचीन मौर्य एवं गुप्त साम्राज्यों का प्रभाव था।

टुण्डला मुगल काल में अकबर के समय में एक प्रमुख राजधानी आगरा की प्रभावशाली स्थिति से प्रभावित हुआ।

ताजमहल के लिए प्रसिद्ध आगरा और काँच के लिए मशहूर फिरोजाबाद के करीब होने से टुण्डला की सांस्कृतिक पहचान को और भी बढ़ावा मिलता है।

टुण्डला जंक्शन दिल्ली-हावड़ा और लखनऊ लाइनों पर एक प्रमुख रेलवे जंक्शन है। यह क्षेत्रीय कनेक्टिविटी और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

क्या मिला?

इशिका

चित्र: मयूख घोष

हमारे घर के पास एक धोबी की दुकान थी। वह लोगों के कपड़े प्रेस करता था और उनसे पैसे लेकर अपना गुज़ारा करता था। एक दिन एक अंकल गाड़ी लेकर आए। उन्होंने धोबी अंकल से प्रेस करे हुए कपड़े लेकर अपनी गाड़ी में रख दिए। जब धोबी अंकल ने उनसे पैसे माँगे तो वे अपने पैसे का रौब दिखाकर उनसे झगड़ा करने लगे। इसके बाद झगड़ा बढ़ गया तो उन्होंने धोबी अंकल को बहुत मारा। उनका एक कुत्ता था, उसको भी मार दिया।

धोबी अंकल की दुकान उस दिन से ही बन्द हो गई। कुछ लोग ऐसे ही होते हैं जो गरीब लोगों से काम करवा लेते हैं और उनको उनकी मज़दूरी का पैसा भी नहीं देते हैं। वह अंकल बहुत मेहनत करके अपना परिवार पाल रहे थे। उनकी दुकान बन्द करवाकर पैसे वाले अंकल को क्या मिला?

इशिका, समूह उजाला, दिगन्तर विद्यालय, जयपुर, राजस्थान

मेरी खिलाड़ी टीचर

आराध्या गुप्ता
चौथी, 'बी', यश विद्या मन्दिर, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

खेल का यह किस्सा मुझे मेरी अध्यापिका ने बताया था।

जब मैं छोटी थी मुझे हॉकी खेलना बहुत पसन्द था। साथ ही मैं बैडमिंटन भी बहुत खेलती थी। कभी-कभी मैं अपने भाइयों के साथ क्रिकेट भी खेल लेती थी। स्कूल में मैं जूनियर हॉकी टीम में थी और अलग-अलग स्कूलों में हॉकी खेलने जाती थी। छठवीं से आठवीं तक मैं सीनियर हॉकी टीम में रही। जब मैं स्कूल से घर आती तो अपने मम्मी-पापा, भाई-बहन के साथ लूडो खेलती।

बारहवीं पास करने के बाद स्कूल से मुझे विदा कर दिया गया। फिर मेरे मम्मी-पापा ने कॉलेज में मेरा दाखिला करवा दिया। लेकिन वहाँ पर खेलने का कोई माहौल ही नहीं था। जब कभी टीवी पर मैच आता तो मैं उसे ज़रूर देखती क्योंकि हॉकी की तरह क्रिकेट मैच भी होता था। जैसे मुझे संगीत से, अपने स्वास्थ्य से, पढ़ाई से और कढ़ाई-बुनाई से प्रेम था, वैसे ही मुझे खेलने-कूदने से भी प्रेम था। मेरा मनपसन्द खिलाड़ी विराट कोहली है और मेरे मनपसन्द फील्डर शाहिद अली जी हैं।

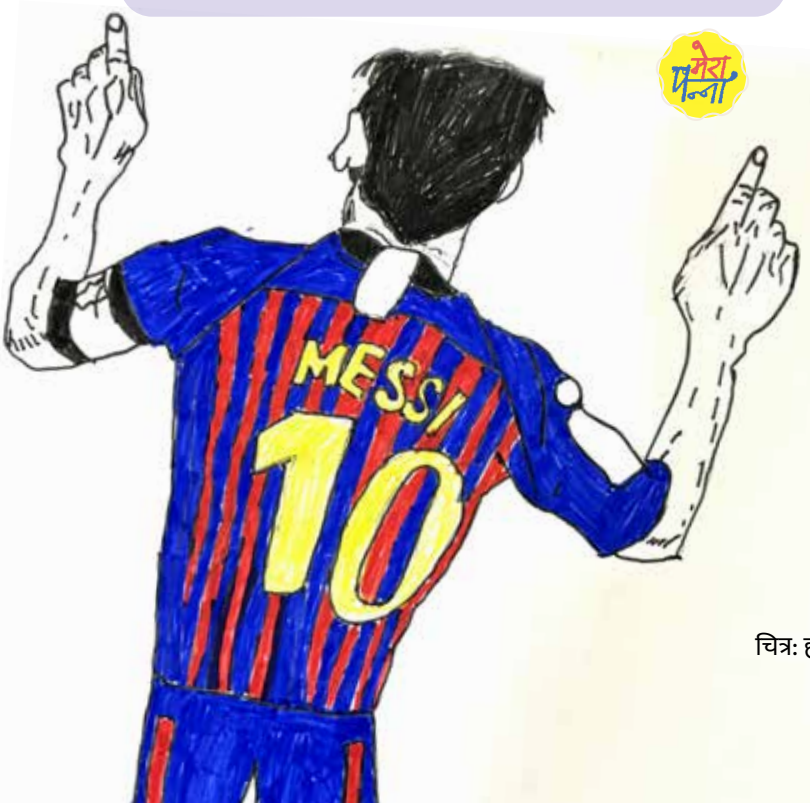

चित्र: हृदन्य राय, पाँचवीं, रणथम्बौर, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

हमारा पहला मैच

आदित्य रमन
सातवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल, पाढ़ा
करनाल, हरयाणा

हम रोज़ शाम को स्कूल में फुटबॉल खेलते हैं। लगभग 6 महीने से हम खेल रहे हैं। अभी तक हमारा कोई मैच नहीं हुआ था। लेकिन कुछ दिनों बाद हमारा मैच होने वाला था – दयाल सिंह स्कूल के बच्चों के साथ। हम उनके स्कूल पहुँचे। विपक्षी टीम पूरी किट में थी, पर हम नहीं। मैच शुरू हुआ। हम नर्वस थे। मैच शुरू होते ही उन्होंने लगातार दो गोल किए। उसके बाद हमारे डिफेंस और मिडफील्डर की गलती की वजह से उन्होंने दो गोल कर दिए। स्कोर 4-2 का था। वो 2 गोल से आगे थे। पर जल्दी ही मैच समाप्त हो गया और हम हार गए। हमारा मैच बहुत अच्छा रहा। और हमने कई चीज़ें सीखीं।

चित्र पहेली -2

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

चित्र: शाम्भवी, यूकेजी, मदर टेरेसा स्कूल, कानपुर, उत्तर प्रदेश

जवाब पेज 86 पर

खेल में हुआ ज़ोरदार झगड़ा

सार्थ गजानन देशिंगकर
चौथी, सृजन आनन्द विद्यालय
कोल्हापुर, महाराष्ट्र
मराठी से अनुवाद: कृत्तिका बुरघाटे

एक बार हम दोस्तों में ऐसा झगड़ा हुआ जो अब तक नहीं सुलझ पाया है। हर शाम खेलते वक्त उस झगड़े के बारे में ज़रूर बात होती है। उस झगड़े में आई चोट के निशान अभी भी ताज़ा हैं।

हुआ ये कि हम सब दोस्त स्कूल की छुट्टी के बाद बिल्डिंग के पैसेज में टेनिस खेल रहे थे। मेरे दोस्त राजवीर ने बॉल नीचे की ओर मार दी। हमारे दो दोस्त बॉल लेने नीचे की ओर दौड़े। बॉल अगर नीचे की ओर जाए तो आउट माना जाएगा – ऐसा नियम इस खेल में था।

मेरे दोस्त बॉल लाने के लिए जी-जान लगा रहे थे। उनके मज़े लेने के चक्कर में राजवीर नियम तोड़कर मेन लाइन से बाहर निकलकर दूसरे के कोर्ट में चला गया। जब दोस्त बॉल लेकर वापिस आए, तो वे राजवीर को नियम न तोड़ने के लिए कहने लगे।

हमारी बात सुनने के बजाय राजवीर दादागिरी करने लगा। वो हमें ही बुरा-भला कहने लगा, गालियाँ बकने लगा और मारपीट पर उतर आया। अपनी तो कोई गलती नहीं है, ये वो सिद्ध करना चाहता था। उसका चेहरा गुस्से से लाल था। उसका आवेश देखकर पहले तो हम सब भीगी बिल्ली की तरह डर गए। लेकिन समूह की ताकत के अन्दाज़े को ध्यान में रखकर हमने भी ज़ोर-से पलटवार किया।

चित्र: अरविन्द पाल, आठवीं, शासकीय माध्यमिक विद्यालय, जेरवारा, सागर, मध्य प्रदेश

चित्र: पूर्वी अमोल दोडके, चौथी, आनन्द निकेतन विद्यालय, सेवाग्राम, वर्धा, महाराष्ट्र

खेल का किस्सा

शनाया
चौथी, कान्हा, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

मैं रोज़ाना घर के नीचे अपने दोस्तों के साथ खेलने जाती हूँ। एक दिन मैं अपने दोस्तों के साथ खेलने गई थी। और जब मैं अपने दोस्तों के साथ कलाबाज़ी कर रही थी तब मैं मुँह के बल गिर गई थी। तब तेरे दोस्तों ने मुझे उठाया और पानी पिलाया और मुझे मेरे घर तक छोड़ने गए। मैं बहुत देर तक रो रही थी। उन सबने मिलकर मुझे हँसाने का प्रयास किया और मेरे लिए छोटा-सा तोहफा लेकर आए।

बास्केट बॉल

वेधा गुप्ता
चौथी, शिव नाडर स्कूल
नोएडा, उत्तर प्रदेश

मैं बास्केट बॉल खेल रही थी। फिर किसी ने मुझे बॉल पास करने के लिए बुलाया। पर गलती से उसने मेरे चश्मे पर मार दिया और मेरा चश्मा टूट गया।

काश मेरे बाल भी ऐसे लम्बे होते।
तू कौन-सा शैम्पू लगाती है? कौन-सा तेल डालती है बालों में?
मैं कुछ भी नहीं लगाती।
मुझे बता नहीं रही है।
घर पहुँचते ही रिया यूट्यूब में लम्बे बालो के उपाय खोजने लगती है...
यह तो बहुत खर्चीला है।
ही Wash में बाल
लंबे हो जायेंगे।
सिर्फ एक रात में 2 इंच बाल लंबे करने का तरीका ....
यह मेरे लिए मुश्किल है।
100% hair growth
मेरा सिक्रेट 10 गुना तेजी से बढ़ेंगे आपके बाल गारंटी।
यह सस्ता और आसान है।

यूट्यूब पर जो-जो बताया मैंने वो सब वैसे-वैसे ही किया।
पर ना तो बाल लम्बे हुए, ना ही घने।
वो तो...
........और भी ज़्यादा झड़ने लगे।
कहीं मैं गंजी ना हो जाऊँ। आज से सारे नुस्खे बन्द।
मैं समझ गई...
कहानी: चार्या मुकुन्दा गोडबोले, सातवीं, ज़िला परिषद स्कूल लोहारा, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र
चित्र: अस्मिता कोरपेनवार

चित्र: अरविश, दूसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, टोंक, राजस्थान

तुम भी जानो

दो हज़ार साल पुरानी दवा

आर्या पटेल
तीसरी 'सी', यश विद्या मन्दिर, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

आपने देखा होगा कि दवाओं पर एक्सपायरी डेट लिखी होती है। जिसका मतलब होता है कि इसे इस डेट के बाद सेवन न करें क्योंकि वो खराब हो जाती है। इटली के समुद्री तट टस्किनी के गहरे पानी में दो हज़ार साल पुरानी दवा मिली। जब डीप सी डाइवर गहरे पानी में खोज कर रहे थे तो उन्हें टीन की एक एयरटाइट डिबिया मिली। जब उसे खोला गया तो चौंकाने वाली बात यह थी कि उसके अन्दर रखी दवाएँ एकदम सूखी थी। जब उन दवाओं की जाँच हुई तो उसमें स्टॉर्च, वैक्स, एनीमल फैट, ऑलिव ऑयल जैसी चीज़ें मिलीं जिनका उपयोग आजकल आँख की बीमारी दूर करने की दवाइयों में किया जाता है। दो हज़ार साल पहली ऐसी दवा का तैयार होना लोगों को हैरान कर गया।

चलने वाला पेड़

मो. अशरफ
तीसरी 'सी', यश विद्या मन्दिर, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

आपने कीड़ों-मकौड़ों को दबोचने वाले और शरमाने वाले पेड़ों के बारे में सुना होगा। आपने फिल्मों में पेड़ को चलते भी देखा होगा। लेकिन एक तरह के पेड़ हैं जो हकीकत में चलते हैं। ये पेड़ इक्वाडोर में पाए जाते हैं। और साल में 20 मीटर तक आगे चले जाते हैं। इन्हें वॉकिंग पाम ट्री कहते हैं। ये पेड़ इन्सानों की तरह नहीं चलते हैं। दरअसल इनकी जड़ें बहुत खास हैं। इन पेड़ों में ज़्यादातर एक ही तना होता है और इसकी नई जड़ें आते ही ये पेड़ थोड़ा आगे खिसक जाते हैं। इस प्रक्रिया में इनकी जड़ें ज़मीन से कुछ फीट ऊपर की और उभरी हुई दिखाई देती हैं। ये पेड़ के पैरों की तरह लगती हैं।

चित्र: इवान, पाँच साल, द मोटिवेशन चाइल्ड एंड एडोलसेंट डेवल्पेमेंट सेंटर, नोएडा, उत्तर प्रदेश

मलाबार ग्लायडिंग फ्रॉग

नवीर
चौथी, आनन्द निकेतन विद्यालय, सेवाग्राम, वर्धा, महाराष्ट्र

ये ऐसा मेंढक है जो ग्लाइड कर सकता है। ये उड़नेवाला मेंढक भारत में ही रहता है। इस मेंढक के चारों पैरों पर पैड रहते हैं। उसके लाल पैड पीछे और आगे होने की वजह से वह ग्लाइड कर सकता है। ये मेंढक ज़्यादा आम्बोली में रहता है। ये आनामलाई ग्लाइडिंग फ्रॉग जैसे दूर तक ग्लाइड कर सकता है। यह 9 से 12 मीटर तक ग्लाइड कर सकता है। जैसे बाकी मेंढकों में फीमेल फ्रॉग बड़ी होती है, वैसे ही इस प्रजाति में भी फीमेल बड़ी होती है। पर मेल फ्रॉग ज़्यादा दूरी तक और ज़्यादा बार ग्लाइड कर सकता है। ये मेंढक दो महीने में ही बड़े हो जाते हैं।

तुम भी पकाओ

अरबी के पत्तों की पकौड़ी

राधिका साहू
नौवीं, मातेश्वरी विद्या इंटर कॉलेज, इटौंजा, लखनऊ

सामग्री:
अरबी के 4-5 मीडियम साइज़ के पत्ते, 500 ग्राम तेल, एक छोटा चम्मच पिसा धनिया, 1 छोटा चम्मच पिसी हल्दी, एक छोटा कप उड़द दाल, पिसी मिर्च व नमक स्वादानुसार।

विधि: सबसे पहले दाल को 2-3 घण्टे के लिए भिगो दें। जब दाल फूल जाए तो उसे पीस लें। हल्दी, धनिया और मिर्च का पेस्ट बना लें और उसे नमक के साथ दाल के पेस्ट में मिला दें। अब अरबी के पत्तों को अच्छी तरह धोकर उनके पीछे का कठोर भाग काट दें। एक-एक करके सभी पत्तों के आगे की तरफ दाल का पेस्ट लगा दें। उनको मोड़कर छोटे-छोटे टुकड़े कर लें। अब कढ़ाही में तेल डालकर गरम होने दें। तेल गरम होने पर वो कटे हुए टुकड़े डालकर तल लें। आप चाहें तो इन्हें भाप में उबालकर भी तल सकते हैं। या फिर बेसन के पेस्ट में भी डालकर तल सकते हैं। फिर हरी चटनी के साथ गरमागरम परोसें।

ठेकुआ

अजीत कुमार
पाँचवीं
पोखरामा फाउंडेशन अकैडमी, पोखरामा, लखीसराय, बिहार

सामग्री (6 लोगों के लिए):
गेंहूँ का आटा - 3 किलोग्राम
मैदा - 1 किलोग्राम
चीनी - 1 किलोग्राम
डालडा/रिफाइंड तेल - 1 लीटर
किशमिश, बादाम, काजू, छुहारा - सब मिलाकर ½ किलो

फोटो: अभिज्ञा, चौथी, रणथम्बौर, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

आपने छठ पर्व का नाम तो सुना ही होगा। कल छठ पर्व है आज मेरी माँ बाज़ार से छठ पर्व के लिए आवश्यक सामग्री लेने गईं। कल सुबह जल्दी उठकर मैं स्नान करके पानी लेने गया। फिर मेरी माँ उठीं और ठेकुआ बनाने के लिए यह सब सामग्री ले आई। फिर ऊपर लिखी सामग्री को मिलाकर उसके पिठिया (साँचे) में रखकर ठेकुए का आकार और डिज़ाइन देने लगीं। फिर आँच पर कढ़ाही रखकर उसमें रिफाइंड डालीं और ठेकुआ तलीं। ठेकुआ तल जाने के बाद हम घाट पर जाने की तैयारी करने लगे। अगर मैदा ज़्यादा डालेंगे तो ठेकुआ भुसभुसा बनेगा।

रोटी के समोसे

स्वरा
पाँचवीं, रणथम्बौर, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

सामग्री:
6-7 बासी रोटियाँ
4 उबले आलू
1 चम्मच कटी हुई अदरक (बारीक कटी हुई)
1 चम्मच हरी मिर्च (बारीक कटी हुई)
2 चम्मच हरी धनिया कटी हुई
नमक स्वादानुसार
1 चम्मच कुटी लाल मिर्च
1 चम्मच जीरा साबुत

विधि:

आलू फोड़कर ऊपर लिखी सारी सामग्री को मिलाकर भर्ता बना लें। रोटी को दो हिस्सों में बराबर-बराबर काट लें (एक रोटी से 2 समोसे बनेंगे)। अब रोटी के एक हिस्से में भर्ता रखकर पान की तरह मोड़कर उसके अन्तिम छोर पर भर्ता लगाकर चिपका दें। चिपके वाले हिस्से को नीचे की तरफ करते हुए सारे समोसे चिपका लें। कढ़ाही में तेल गरम करके सारे समोसों को सुनहरा होने तक तल लें। धनिए-पुदीने की चटनी या टमाटो सॉस के साथ परोंसे। इतनी सामग्री से 14-16 समोसे बन जाएँगे।

आटा और महुआ की डोभरी

श्रेया चौहान
पाँचवीं, नर्मदा वैली इंटरनेशनल स्कूल, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

सामग्री: 1 किलो गेंहूँ का आटा, महुआ, 1/2 किलो गुड़, दूध

विधि: आटे को गूँथकर हाथ से लम्बी-लम्बी डोर बनाकर हवा में रखते हैं। महुओं को धोकर एक घण्टा उबालते हैं। उसे पानी से निकालकर छान लेते हैं। फिर उसमें आटे की बनी हुई डोर डालते हैं। फिर गुड़ डालते हैं। फिर अच्छे से पकने के लिए आधा घण्टा गैस पर रख देते हैं। फिर इसे दूध के साथ खाते हैं।

किताबें कुछ कहती हैं...

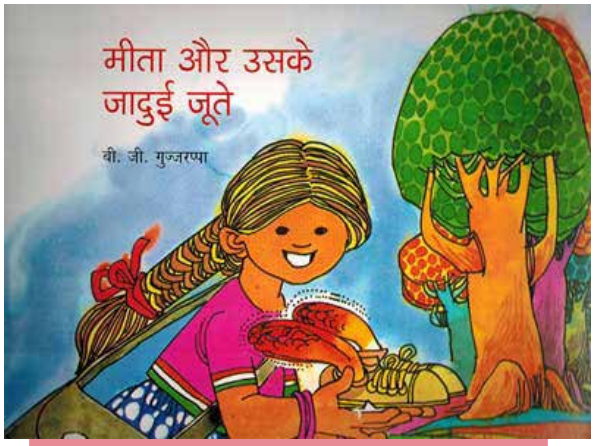

मीता और उसके जादुई जूते

लेखक व चित्रकार: बी. जी. गुजरप्पा
प्रकाशक: राष्टीय पुस्तक न्यास
भाषा: हिन्दी
समीक्षा: हिताक्षी, चौथी, प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी, बुलन्द शहर, उत्तर प्रदेश

मीता और उसके उसके जादुई जूते कहानी है मीता की। जिसको जादुई जूते मिल गए। जिनको पहनकर मीता उड़ने लगी। मुझे मीता की एक बात बुरी लगी कि उसे अपने जादुई जूते पहनकर क्लास में नहीं जाना चाहिए था। मीता की यह बात मुझे बहुत अच्छी लगी कि उसने अपने जादुई जूते अपने दोस्तों को दे दिए। मुझे किताब के चित्र भी बहुत अच्छे लगे। *मीता और उसके उसके जादुई जूते* बहुत अच्छी कहानी है।

अगर-मगर

लेखक: गुलज़ार
चित्रकार: एलन शॉ
भाषा: हिन्दी
प्रकाशक: इकतारा
समीक्षा: रिधान खरबन्दा, तीसरी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

मेरी मनपसन्द किताब है *अगर-मगर*। किताब में बच्चों ने प्रश्न पूछे और गुलज़ार जी उनके हँसी वाले जवाब दिए हैं। मुझे किताब के चित्र अच्छे लगे। मुझे यह किताब मज़ाकिया लगी।

धूप खिली है हवा चली है

लेखक: प्रयाग शुक्ल
चित्रकार: तापोशी घोषाल
भाषा: हिन्दी
प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन
समीक्षा: मृंगाक चमोली, सातवीं, केन्द्रीय विद्यायल, पौड़ी, उत्तराखण्ड

मैंने एक किताब पढ़ी। इस किताब का नाम है *धूप खिली है हवा चली है*। इस किताब के चित्र मुझे बहुत अच्छे लगे। इसमें कवर पेज में सूरज हवा फेंक रहा है जबकि लोग सूरज को कोसते रहते हैं कि वो गर्मी फेंकता है। ये एकलव्य का प्रकाशन है। इसमें दो चुटिया वाली लड़की किताब पढ़ती हुई दिखाई देती है। ये लड़की एकलव्य की सभी किताबों में ऐसे ही बैठी रहती है।

'चिड़िया आई पानी पीने' कविता भी अच्छी है। हमारे आँगन में खडीक और टिमूर के पेड़ में खूब सारी गौरेया रहती हैं। उनके लिए डिब्बों में पानी रखते हैं। आजकल बारिश में उन्हें पानी की ज़रूरत नहीं पड़ती। बरतन में रखे हुए पानी में कई चिड़िया नहाती भी हैं। 'रेल चल रही है' कविता की पटरी का चित्र अच्छा लगा। लेकिन पटरी एक समान होती है। अब हमारे पहाड़ में भी रेल आने वाली है। इस किताब को रंगीन होना चाहिए था। इसमें एक पेज कोरा है। मैं भी इसमें एक कविता लिखूँगा।

तापोशी घोषाल के चित्र मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। इसमें 12 कविताएँ हैं। इसमें बहुत तरह की तितलियाँ बनी हुई हैं। 'केरल के केले' कविता मुझे अच्छी लगी। मुझे भी केरल जाना है। 'फूलों की बेल' कविता भी मुझे अच्छी लगी। हमारे यहाँ कद्दू की और छेमी-फराशबीन की बेलें होती हैं। छेमी की बेल में पर्पल कलर के फूल खिलते हैं। कद्दू की बेल में पीले रंग के बड़े फूल खिलते हैं। उनकी सब्ज़ी भी बनती है। बन्दर करेले की बेल खराब कर देते हैं।

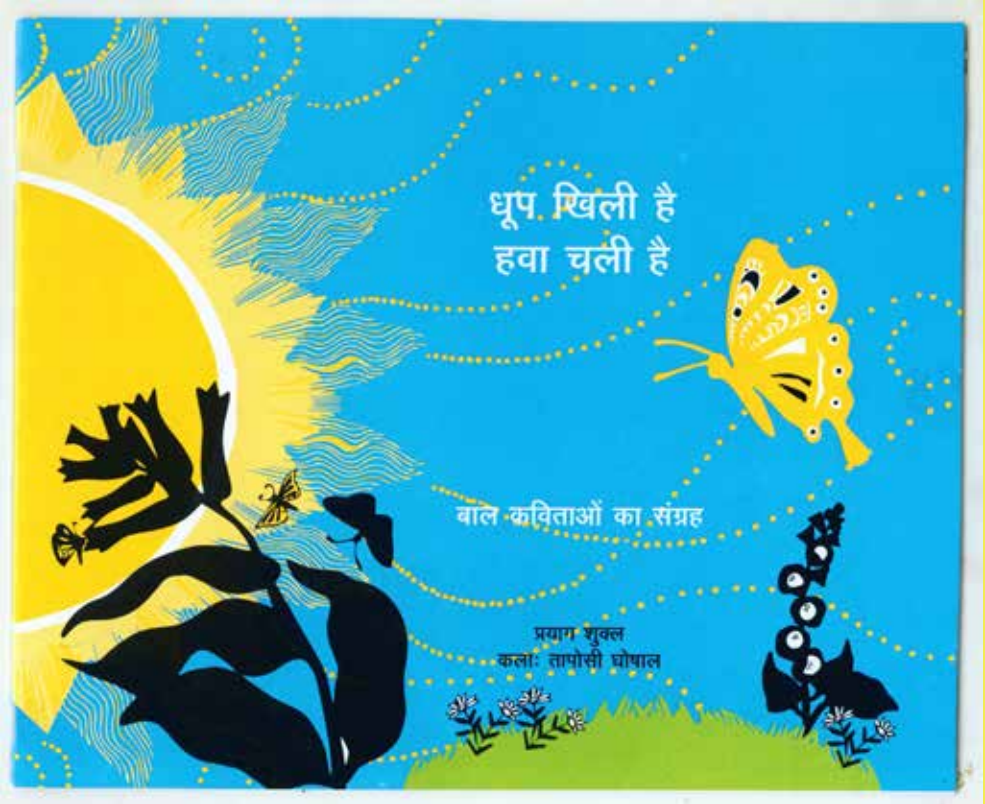

भूलभुलैया -2

चित्र: महाराष्ट्र के सतारा ज़िले के फलटण के प्रगत शिक्षण संस्थान की पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा मिलकर बनाया गया।

चित्र: उत्तराखण्ड के नैनीताल ज़िले के ग्राम प्यूड़ा के आरोही बाल संसार की तीसरी कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा मिलकर बनाया गया।

खेती में बदलाव

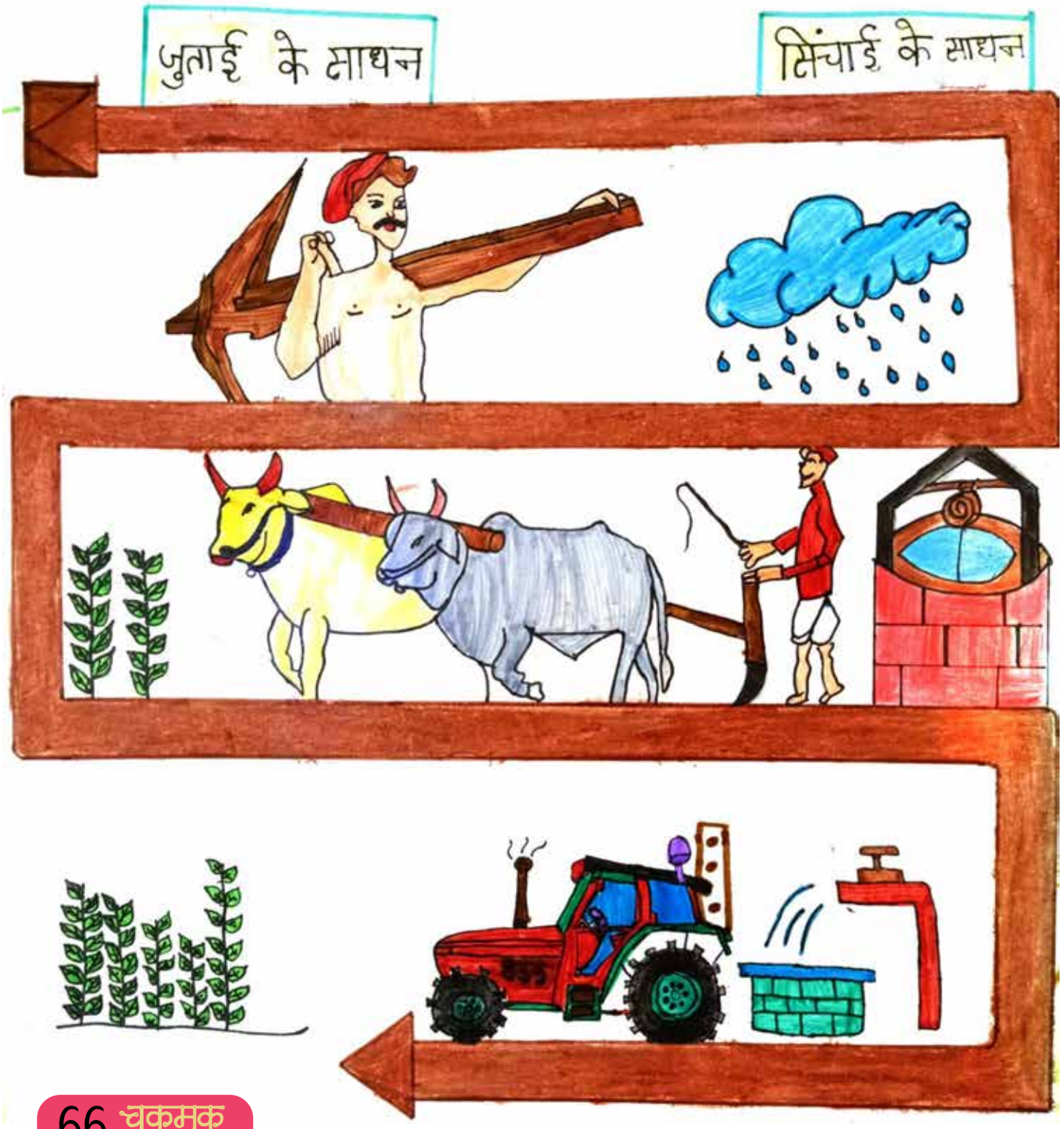

लेख और चित्र: आदित्य और हर्ष
छठवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल, पाढ़ा, करनाल, हरयाणा

हमने हमारे गाँव की कृषि व्यवस्था के विकास और उसके इतिहास को जानने के लिए अपने कई बुज़ुर्गों से साक्षात्कार किया। इसके लिए पहले हमने एक प्रश्नावली तैयार की थी। बुज़ुर्ग व्यक्तियों ने हमें बताया कि पहले ज़्यादातर व्यवसाय जाति आधारित थे। एक मुख्य जाति के लोग एक जैसा काम करते थे। मुख्य व्यवसाय कृषि और उससे सम्बन्धित अन्य काम थे।

पहले फसलें पानी आधारित थीं। किसान बरसात के भरोसे थे। नदी का पानी भी उपयोग में लिया जाता था। अब नदी में पानी नहीं है, सिर्फ बरसात में थोड़ा आता है। पहले पशुओं की सहायता से कृषि कर ली जाती थी। बहुत कम औज़ारों का उपयोग किया जाता था। पानी की कमी के कारण ज़्यादातर मोटे अनाजों की खेती की जाती थी। पशुओं के गोबर की खाद फसलों में डाली जाती थी। गोबर को खेत के लिए सोना कहा जाता था। उसे गन्दा नहीं मानते थे।

फसलों में न के बराबर बीमारियाँ आती थीं। कृषि के लिए बहुत कम जगह थी। हमारे बुज़ुर्गों के अनुसार नए औज़ारों और तकनीकों ने हमारा काम आसान किया, लेकिन इससे खर्च बहुत बढ़ गया है।

पहले कई बार बारिश की कमी के कारण कम अनाज उगता था। मजबूरी में लोग वनस्पतियों व पेड़ों की छाल को पीसकर खाते थे। गाँव में अनाज खरीदने के लिए कोई भी दुकान या बनिया नहीं था। अनाज की किल्लत के कारण अनाज छुपाकर लाया जाता था। पहले ज़्यादातर त्यौहार फसलों को काटने के बाद मनाए जाते थे। हमारे 'बला' दादा मज़दूरी का काम करते थे। उनको मज़दूरी अनाज के रूप में मिलती थी। उन्होंने कभी भी मज़दूरी का लेन-देन रुपए से नहीं किया। पहले कभी बीज नहीं खरीदे जाते थे। अपनी फसलों से बीज बचाकर रखते थे।

बाद मे कुँए होने से पानी की मात्रा थोड़ी बढ़ने के कारण मोटे अनाजों के साथ बाकी अनाज भी उगाए जाने लगे। पशुओं के द्वारा खेती की जाती थी। धीरे-धीरे मशीनें भी आ गईं। गेंहूँ और तुड़ी को अलग करने के लिए थ्रेसर का उपयोग किया जाने लगा था। अब लेबर की सहायता कम ली जाती थी। कीटनाशक और दवाइयों का उपयोग भी किया जाने लगा। पहले फसलों के लिए एक कहावत भी कही जाती थी – 'चना चा का, गेहूँ भा का और ईख बेरा नी क्या का'।

पहले के समय में भैंस की तुलना में ज़्यादा ज्यादा पाली जाती थी। क्योंकि उनसे प्राप्त बछड़े को खेत में उपयोग किया जाता है। बछड़े को पुत्र के समान माना जाता है क्योंकि वो भी किसान के साथ खेती में काम करता था। गाँव में कोई भी डेयरी व्यवस्था नहीं थी, पैकेट का दूध भी नहीं था। भैंस व गाय का दूध पिया जाता था। दूध कभी भी नहीं बेचा जाता था, केवल भाईचारे में दिया जाता था। कहावत थी कि 'दूध बेच दिया जैसे पूत बेच दिया'। फिर धीरे-धीरे नए उपकरणों की वजह से बछड़े की ज़रूरत न होने के कारण बछड़ी की कामना होने लगी थी। डेयरी व्यवस्था बढ़ गई थी।

→ लगौरी / पिट्ठू

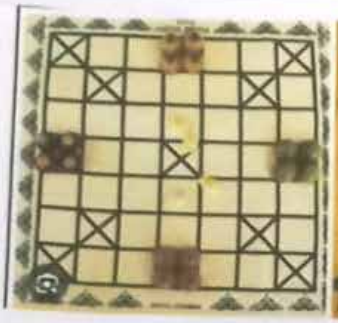

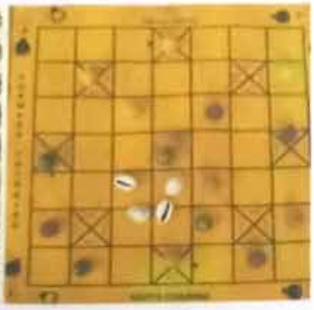

अष्ट चम्मा

ताश के पत्ते

कैरम

कंचे / गोटी

टिक्कर बिल्ला

गरमी की छुट्टियाँ चल रही थी। मैं अपनी दादी के घर गई थी। कोई बाहर खेलने नहीं आता था। मैंने दादी से पूछा, “दादी आजकल कोई बाहर खेलता नहीं है। हम कहीं सैरसपाटा करने चलें क्या?” और हम चल पड़े।

टहलते हुए मैंने दादी से पूछा, “दादी आप बचपन में कैसे छुट्टियाँ बिताती थीं?”

दादी बोलीं, “हम तो घर में बैठते नहीं थे। आजकल सब बच्चे डिजिटल ज़िन्दगी जी रहे हैं। हम तो खूब खेलते थे। तुम लोग तो टीवी, मोबाइल में ही खो गए हो। देखो हम क्या-क्या खेलते थे–

लगौरी, गोटियाँ, टिक्कर बिल्ला, गुल्ली-डण्डा, कैरम, अष्टचम्मा, ताश के पत्ते ये सब खेलते थे। चाहे दिन हो या रात बच्चे, बड़े सब मिलकर खेलते थे। छुट्टियाँ कब खतम हो जाती थीं पता ही नहीं चलता था।”

मैंने सोचा, “काश वो पुराने दिन फिर से आ जाएँ।”

मेरा पन्ना

पुराने खेल

चित्र व लेख: अन्विता जोशी
चौथी, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल
चंगलपेट, तमिलनाडु

खिलाड़ी विनेश फोगाट

ओलीना खुराना
चौथी, शिव नाडर स्कूल
नोएडा, उत्तर प्रदेश

चित्र: नभ खरे, सातवीं, रानी लक्ष्मीबाई पब्लिक स्कूल, दतिया, मध्य प्रदेश

यह किस्सा पेरिस ओलम्पिक खेलों 2024 की प्रमुख भारतीय कुश्ती खिलाड़ी विनेश फोगाट का है। उन्होंने कई अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में अपने बढ़िया प्रदर्शन से देश का नाम रौशन किया है।

2024 पेरिस ओलम्पिक में उनकी जीत की सबको उम्मीद थी। विनेश ने महिला कुश्ती 50 किलोग्राम में उच्च प्रदर्शन किया। उन्होंने 4 बार की वर्ल्ड चैम्पियन यूई सुसाकी को हराकर इतिहास रचा और क्वार्टर फाइनल में पहुँची।

विनेश नें क्वार्टर फाइनल और सेमीफाइनल प्रतियोगिता भी जीतीं। और फाइनल में पहुँचकर भारत के करोड़ों लोगों का दिल जीता। लेकिन वह फाइनल मुकाबले में खेल नहीं पाईं। 50 किलोग्राम से ज़्यादा वज़न होने के कारण उन्हें अयोग्य घोषित किया गया। जिससे सारे भारतियों का दिल टूट गया।

उनकी टीम ने उनका वज़न 53 किलोग्राम से 50 किलोग्राम लाने का रात भर प्रयत्न किया। वह ट्रेडमिल पर भागीं, पसीना बहाया, उन्होंने पानी नहीं पिया, यहाँ तक कि उन्होंने अपने भी बाल काटे। लेकिन फाइनल मुकाबले की सुबह उनका वज़न 100 ग्राम ज़्यादा पाया गया और उन्हें अयोग्य (disqualify) घोषित किया गया।

देश के लिए गोल्ड लाने का उनका सपना टूट गया। एक रात में इतना वज़न कम करने के प्रयास में उनकी तबियत भी खराब हो गई और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। पूरे देश ने इस बात का दुख मनाया। परन्तु जब वह भारत पहुँचीं तो उनका भव्य स्वागत किया गया और उन्हें सम्मान दिया गया।

2
19
1
21
15
19
9
20
17
10
12
4
11
7
22
3

सुडोकू-2

				1	7			4
		6			2		7	
					6		5	
1		7			3	5		6
8				5		4	2	7
5				6			9	
			1			6	4	9
		9		7	4	2	3	5
3			6	2	9	7	1	

चित्र पहेली -3

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

1			2		3		4	
5	6							
						7		8
9		10		11				
12						13		
				14	15			
16			17		18			
		19						20
	21				22			

जवाब पेज 87 पर

कहानी पूरी करो

इस कहानी की शुरुआत या इसके बाद का हिस्सा लिखकर भेजो। चयनित कहानियाँ नवम्बर-दिसम्बर के विशेषांक में प्रकाशित होंगी।

"मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत है।"

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्हें मेरी ऐसी क्या ज़रूरत पड़ गई?

"तुम्हारी बन्दूक अब भी तुम्हारे पास है या उसे ठिकाने लगा चुके हो?"

मैंने अचरज से कहा, "हाँ है, लेकिन उसमें जंग लग गई होगी।"

"क्या तुम उसे लेकर कल मेरे घर आ सकते हो?"

मैंने ध्यान-से उनके चेहरे को देखा। वे वाकई गम्भीर थे।

"और हाँ, गोलियाँ भी साथ लेते आना।"

"ज़रूर, लेकिन आपको इसकी क्या ज़रूरत पड़ गई? क्या आपके घर के आसपास जंगली जानवर हैं या चोर-लुटेरों का आतंक है?"

"जब तुम मेरे घर आओगे तो तुम्हें सब कुछ बता दूँगा।"...

अलवीरा
समूह रौशनी, दिगन्तर स्कूल, जयपुर, राजस्थान

दूसरे दिन उसका दोस्त उसके घर पर पहुँच गया और बन्दूक व गोलियाँ मँगवाने का कारण पूछा। उसने बताया, "मेरे पास वाले जंगल में एक शेर ने आतंक मचा रखा है। उसने अब तक चार-पाँच लोगों को मार दिया है और वह कभी भी मेरे घर पर आ सकता है। इस कारण मुझे तेरी बन्दूक व गोलियों की ज़रूरत पड़ी। इस पर दोस्त कहता है, "क्या तुम शेर को मारोगे?" वह जवाब देता है, "अपने बचाव के लिए कुछ भी किया जा सकता है।" तब वह दोस्त बोलता है, "यदि तुम्हें सच में ही शेर का डर है तो रेस्क्यू टीम को बुलवाकर शेर को पकड़वा सकते हो। बन्दूक से तो तुम केवल अपना ही बचाव करोगे। लेकिन रेस्क्यू टीम को बुलाकर तुम अपने साथ-साथ अन्य लोगों का भी बचाव कर सकते हो। वह इस सुझाव से सहमत था। अगले दिन उसने रेस्क्यू टीम को फोन किया। रेस्क्यू टीम आकर शेर को पकड़कर ले गई। इस प्रकार बिना शेर को मारे उसने अपनी व अपने साथियों की जान बचाई।

तनवी सोलंकी
आठवीं, लायंस जूनियर कॉलेज, मनावर, धार, मध्य प्रदेश

"हाँ ठीक है", इतना कहकर सुरेश अपने घर चला गया।

लेकिन उसका मन अशान्त था। वह गम्भीर सोच में डूब चुका था कि आखिर मोहन ने उसे अपनी बन्दूक लाने को क्यों कहा।

अगले दिन सुरेश ने अपनी बन्दूक व गोलियाँ साथ रखीं और मोहन के घर चल दिया। मोहन भी सुरेश का इन्तज़ार ही कर रहा था। घर पहुँचते ही सुरेश ने पूछा, "अब बताओ तुम इस बन्दूक से क्या करने वाले हो?" जवाब मिला, "आओ मेरे साथ जंगल की तरफ। तुम्हें वहीं जाकर दिखाता हूँ कि मुझे बन्दूक की ज़रूरत क्यों है।"

रोशनी
छठवीं, सर्वोदय कन्या विद्यालय, दीवान हॉल, दिल्ली

मैंने थोड़ा सोचा पर जवाब मिलने में वक्त था। घर में जाने के बाद भी मैं यही सब सोच रहा था। पता नहीं उसे क्या ज़रूरत पड़ गई होगी, वो ठीक होगा या नहीं। जैसे-तैसे मैं सो पाया। अगली सुबह मैं थोड़ा उत्साहित था और थोड़ा डरा हुआ भी। मैं बार-बार यही सोच रहा था कि वो ठीक होगा या नहीं। मैंने अपनी बन्दूक निकाली जिसमे थोड़ी जंग लगी हुई थी। पर वो ठीक काम कर रही थी। मैंने थोड़ी गोलियाँ जेब में लीं और चल दिया। जब मैं उसके घर पहुँचा तो वह उतना ही गम्भीर था जितना मैं कल था। मैंने उसे बन्दूक और गोलियाँ दीं। मेरी उससे ज़्यादा बात भी नहीं हुई। उसने चुपचाप बन्दूक और गोलियाँ लीं और चल पड़ा। गौर करने की बात यह थी कि उसी समय मेरी नींद खुल गई और आगे का सपना मैं देख नहीं पाया।

मानवी टनवाल
पाँचवीं, हैप्पी चिल्ड्रन लाइब्रेरी, ग्राम सीम
नैनीताल, उत्तराखण्ड

तुम मेरे घर आओगे तो तुम्हें सब कुछ बता दूँगा। जब वह उसके घर पहुँचा तो उससे कहा, “ये लो बन्दूक।” उसने बन्दूक ली और उसका धन्यवाद किया। उसने कहा, “जब मैं मीट बनाता हूँ और जब मैं मीट खाता हूँ तो कुत्ते और बिल्ली आ जाते हैं और मेरा खाना खा जाते हैं। फिर मैं भूखा ही सो जाता हूँ। इसलिए मैंने तुम्हारी बन्दूक माँगी। अब जब मैं मीट बनाऊँगा तो मीट की खुशबू उनकी नाक में जाएगी। खुशबू सूँघकर दोनों खाने को आएँगे तो मैं बन्दूक चला दूँगा और वह डर जाएँगे। फिर वो कभी नहीं आएँगे। और मैं आराम से खाना खा सकूँगा।”

जंगल में जाकर सुरेश ने देखा कि मोहन ने तो एक टारगेट बना रखा है। उस पर अभ्यास कर मोहन निशाना साधने में दक्षता हासिल करना चाहता है ताकि वह ओलम्पिक में देश के लिए गोल्ड मेडल ला सके। मोहन के इस उद्देश्य से बन्दूक माँगने पर सुरेश को काफी प्रसन्नता हुई। उसने कहा, “तुम्हें और जो भी मदद चाहिए हो मुझसे कहना। मैं हर सम्भव मदद के लिए तैयार हूँ।”

बन्दूक मिलने और उसके साथ अभ्यास से मोहन निशाना साधने में अर्जुन की तरह हो गया। अब उसके लिए किसी भी लक्ष्य को भेदना आसान काम हो गया। ओलम्पिक में मोहन ने सटीक निशाना साधकर देश को गोल्ड मेडल दिलवाया। मोहन ने इसका श्रेय सुरेश को दिया क्योंकि सुरेश की मदद से ही वह यह कामयाबी हासिल कर सका था।

बस्तर चो दसराहा

राधिका मौर्य
पाँचवीं, सोररास पारा, तोकापाल
बस्तर, छत्तीसगढ़
हलबी से अनुवाद: अभिजीत तायडे

हमारे बस्तर में जितना भी त्यौहार होता है उनमें से दशहरा त्यौहार सबसे बड़ा है। दशहरा जगदलपुर के पास होता है। हमारे बस्तर में दशहरा के समय सभी लोग दशहरा देखने के लिए जाते हैं। मैं भी दशहरा देखने गई थी।

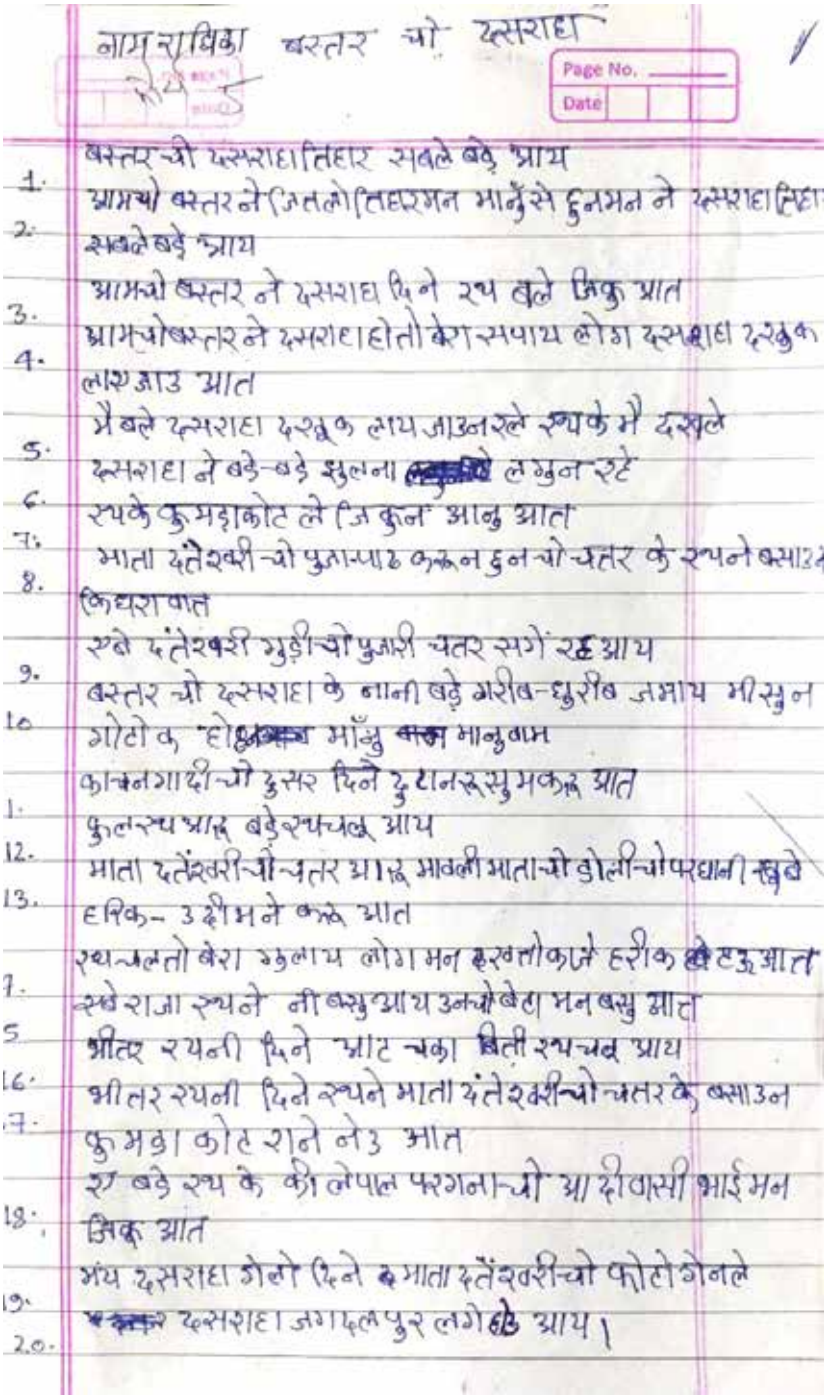

बस्तर में दशहरा के दिन रथ भी खींचा जाता है। रथ को मैंने भी देखा। रथ को कुम्हड़ाकोट से खींचकर लाया जाता है। माई दंतेश्वरी का पूजा पाठ करके माई का छत्र को रथ में बिठाकर घुमाया जाता है। अभी दंतेश्वरी गुड़ी का पुजारी छत्र के साथ रहते हैं। दशहरा में बड़े-बड़े झूला लगे हुए थे। काछन गादी के दूसरे दिन दो रस्म किया जाता है। फूल रथ और बड़ा रथ चलता है। माता दंतेश्वरी के छत्र और मावली माता के डोली का परघाने को खूब हर्ष-उल्लास के साथ करते हैं। रथ चलते समय सभी लोग देखने के लिए उत्साहित होते हैं। अभी राजा रथ में नहीं बैठते हैं, उनके बेटे लोग बैठते हैं।

भीतर रैनी (बस्तर के दशहरे की एक प्रथा) के दिन आठ चक्के का रथ चलता है। भीतर रैनी के दिन रथ में माता दंतेश्वरी के छत्र को बिठाकर कुम्हड़ाकोट ले जाते हैं। इस बड़े रथ को किलेपाल परगना के आदिवासी भाई लोगों द्वारा खींचा जाता है। बस्तर के दशहरा को छोटे-बड़े, गरीब, दुखी सभी एक होकर मनाते हैं। मैंने दशहरा के दिन माता दंतेश्वरी का फोटो खरीदी।

मेरा पन्ना

चित्र: पीयूष, पाँचवीं, शासकीय प्राथमिक शाला, मराईपारा, रायगढ़, छत्तीसगढ़

किताबें कुछ कहती हैं...

मेरी यादों का पहाड़

लेखक: देवेन्द्र मेवाड़ी
प्रकाशक: नेशनल बुक ट्रस्ट
भाषा: हिन्दी
समीक्षा: अंजलि राना, आठवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

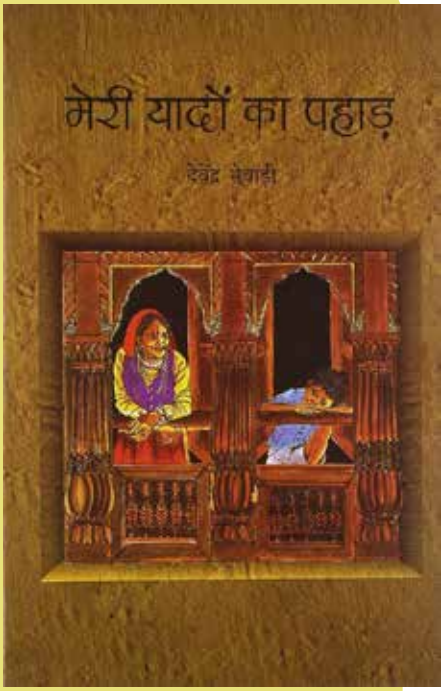

मैं कई दिनों से एक पुस्तक पढ़ रही है। यह उस मनुष्य की जीवनी है जो बहुत ही मेहनती और बहादुर था। आप जानते हैं मैं किसकी बात कर रही हूँ। वह हैं हमारे चहेते मशहूर लेखक देवेन्द्र मेवाड़ी जी। इस पुस्तक को पढ़कर मुझे काफी प्रेरणा मिली और मेरी समझ भी विकसित हुई। इस पुस्तक का नाम *मेरी यादों का पहाड़* है। मुझे देवेन्द्र जी की जीवनी पढ़कर बहुत कुछ समझ आया। उन्होंने इसमें अपने बचपन से लेकर नौजवान होने तक की जीवनी लिखी है। मैं उनके जीवन से बहुत प्रभावित हुई हूँ। उनका जीवन इतने कष्ट से गुज़रा, फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने खूब मेहनत की और आज इतने मशहूर लेखक बन गए। मुझे इस किताब को पढ़कर काफी प्रेरणा मिली।

एक अनोखा सफर

लेखक: पावणन
चित्रकार: आयुष राजवंशी और मोहित श्रीवास्तव
भाषा: हिन्दी
प्रकाशक: कथा प्रकाशन
समीक्षा: मुस्कान, दीपालया कम्युनिटी लाइब्रेरी, गोलाकुआँ, दिल्ली

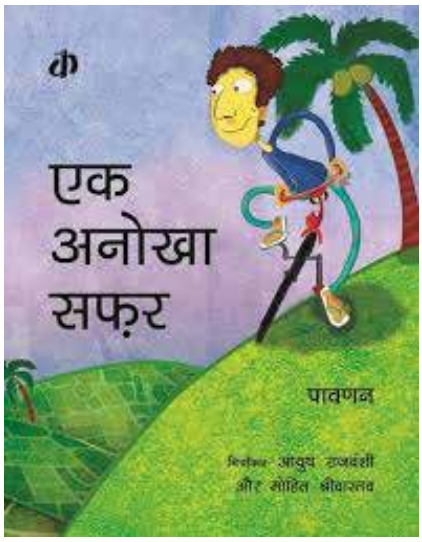

मुझे इस कहानी को पढ़कर यह अच्छा लगा कि इसमें जो लड़का है उसे घूमने का बहुत शौक है। घूमने का साधन चाहे जो भी हो, पर उसे घूमना है। मौसम चाहे जैसा भी हो, उसे सैर करना बहुत पसन्द है। वो सैर करने के लिए साइकिल से ही निकल पड़ता है। वो काफी दूर का सफर तय कर लेता है। बारिश की बूँदें या धूप जो भी हो वह बस चलता रहता है। और सफर का आनन्द लेता है। मुझे भी सफर करना बहुत पसन्द है। उसकी एक और खास बात है कि वह बच्चे को साइकिल चलाना सिखाता है। और वह बच्चा जल्दी सीख जाता है। तो वह साइकिल बच्चे के पास ही छोड़ देता है और बस में चढ़ जाता है। और उस बच्चे का मुस्कराता हुआ चेहरा सोचता रहता है।

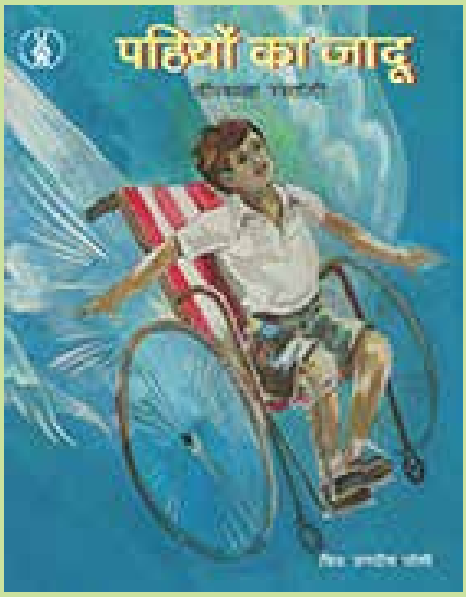

पहियों का जादू

लेखक: वीरबाला रस्तोगी
चित्रकार: जगदीश जोशी
प्रकाशक: एसोसिएशन ऑफ राइटर एंड इलस्ट्रेटर फॉर चिलड्रन
भाषा: हिन्दी
समीक्षा: उत्कर्ष वर्मा, आठवीं, दीपालया कम्युनिटी लाइब्रेरी, गोलाकुआँ, दिल्ली

मुझे इस कहानी में यह अच्छा लगा कि साहिल की वजह से सब बच्चों का नया खेल मिल गया – पहियों का जादू। साहिल की उदासी को देखते हुए प्रिया उसे खेल के लिए मैदान में लाई। यदि प्रिया साहिल को खेल के मैदान में नहीं लाती तो सभी बच्चों को एक नया खेल नहीं मिल पाता। और साहिल की परियों की दुनिया में जाने का एहसास नहीं मिल पाता और वह दुखी ही रहता।

खिचड़ी

प्रस्तुति: जितेन्द्र कुमार
चित्र: दुर्गा बाई व्योम
प्रकाशक: एकलव्य फाउण्डेशन
भाषा: हिन्दी
समीक्षा: अनुप्रिया और जागृति, तीसरी, दीपालया कम्युनिटी लाइब्रेरी, दिल्ली

मुझे *खिचड़ी* लोककथा बहुत अच्छी लगी। जब मैं कहानी पढ़ रही थी तो मुझे अपनी नानी के हाथ की बनी खिचड़ी की याद आ गई। मेरी नानी मकर संक्रान्ति को बहुत स्वादिष्ट खिचड़ी बनाती हैं। जब कहानी में किसान बिरजू को मार रहा था तो मुझे बुरा लगा क्योंकि बिरजू गिर गया था। और किसान उसे उठाने की बजाय मार रहा था। जब बिरजू 'उड़ चिड़ि' बोलते हुए जा रहा था तो मुझे हँसी आ रही थी कि बिरजू कितना बुद्धू है कि उसे खिचड़ी शब्द याद करने में इतनी मुश्किल हो रही थी।

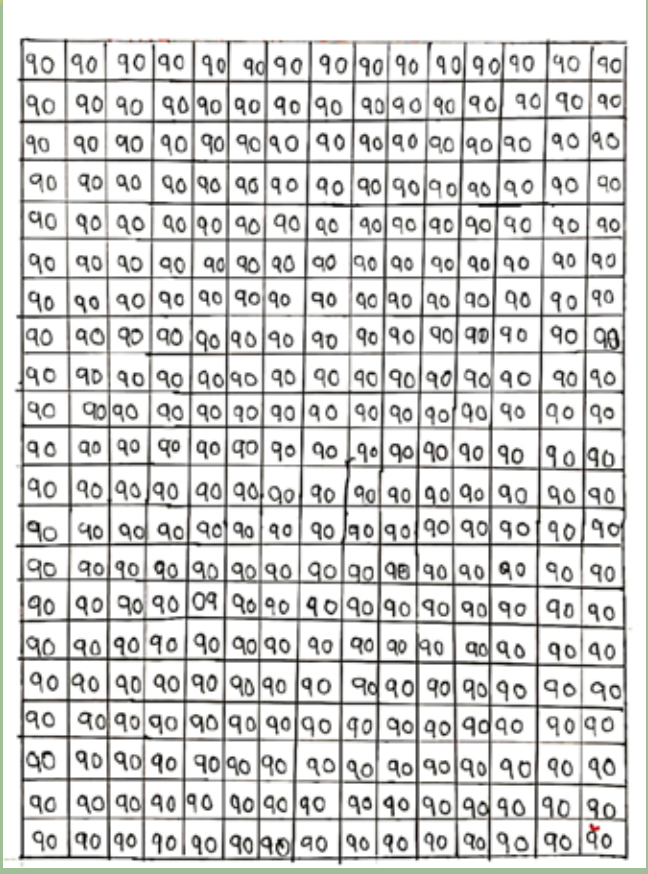

यह सवाल हरयाणा के करनाल ज़िले के पाड़ा ग्राम के दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल की सातवीं कक्षा के छात्र कियान ने भेजा है।

9. इनके बीच कहीं 09 छिपा है। तुमने ढूँढ लिया क्या?

10. इन पैंसिलों को इस तरह से जमाओ कि—

- लाल रंग की पैंसिल के बगल में सिर्फ एक पैंसिल हो।
- नीली पैंसिल, हरी पैसिंल के दाईं ओर हो।
- पीली या हरी पैंसिल या तो पहले या तीसरे स्थान पर हो।

11. दी गई ग्रिड में कई सारी मशहूर इमारतों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

दी	मा	को	आ	मे	र	कि	ला	बा
इ	पा	र्णा	मै	सू	र	पै	ले	स
ण्डि	मा	क	वि	ज	य	स्त	म्भ	ला
या	ता	म	ला	ता	ज	म	ह	ल
गे	चा	न्दि	बा	सा	न्त	गो	वा	कि
ट	स्तू	र	जी	ड़ा	र	ल	म	ला
वि	प	कू	मी	मे	म	गु	ह	पा
क्टो	रि	या	का	ना	न्त	म्ब	ल	ज
कु	तु	ब	मी	ना	र	ज	बा	मा

12. सैम के परिवार में 10 मामा और 10 मामियाँ हैं। उसके 20 ममेरे भाई-बहन हैं। उन सभी की एक मामी हैं जो सैम की मामी नहीं है। ऐसा कैसे हो सकता है?

13. अहाना को याद है कि अस्मा का जन्मदिन पक्के तौर पर 14 अप्रैल के बाद और 20 अप्रैल से पहले आता है। मैथ्यू को याद है कि अस्मा का जन्मदिन पक्के तौर पर 18 अप्रैल के बाद और 22 अप्रैल से पहले आता है। इसके आधार पर क्या तुम बता सकते हो कि अस्मा का जन्मदिन किस दिन है?

माथापच्ची

14. सभी खाली जगहों में एक ही शब्द आएगा। बताओ कौन-सा?

.... नाम की एक लड़की थी। उसने एक .... बनाया। फिर .... ने वो .... अपने मम्मी को ....। मम्मी को .... बहुत पसन्द आया।

15. मेज़ पर चार शीशियाँ रखी हैं। उनमें से तीन में चीनी है और एक में नमक। चारों पर चिप्पी लगी हुई है। पर उनमें से केवल एक पर ही सही चिप्पी लगी है।

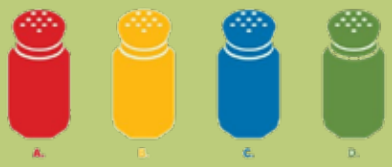

शीशी 1 : इसमें नमक है।
शीशी 2 : इसमें नमक है।
शीशी 3 : इसमें चीनी है।
शीशी 4 : दूसरे नम्बर की शीशी में नमक नहीं है।
तो बताओ कि नमक किस शीशी में है?

16. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग रंग की शीशी आनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी शीशी आएगी?

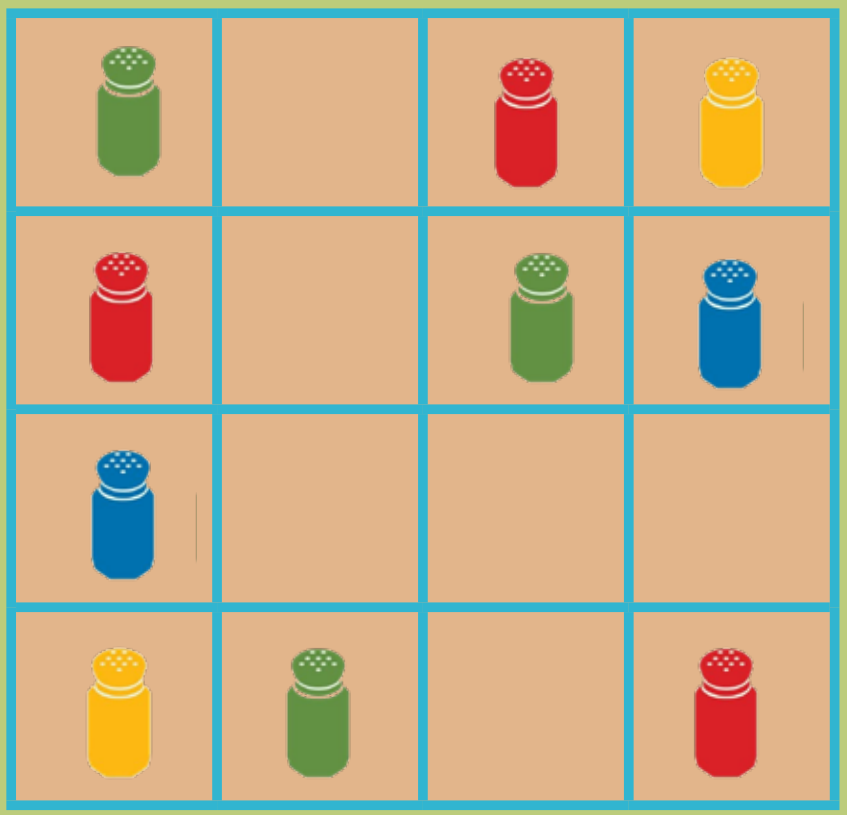

फटाफट बताओ

हलारी गधे भारत के किस राज्य में पाए जाते हैं?
1. महाराष्ट्र
2. गुजरात
3. पंजाब
4. राजस्थान

(2. गुजरात)

सिर पर ताज, गले में थैला
मेरा नाम बड़ा अलबेला

(मुर्गा)

वैसे तो मैं काला
जलाने पर लाल
फेंकने पर सफेद
खोलो मेरा भेद

(कोयला)

मीठा-मीठा स्वाद है मेरा
मधुमक्खियों के घर है बसेरा

(शहद)

ऐसा कौन-सा अनाज
जिसकी होती टेढ़ी नाक

(चना)

अन्तिम दोनों पहेलियाँ उत्तर प्रदेश के नोएडा के शिव नाडर स्कूल की चौथी कक्षा के छात्र संविध सिंह ने भेजी हैं।

जवाब पेज 86 पर

बढ़ता प्रदूषण

शुभांकर खरे
चौथी, सरिस्का, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

आज वर्ल्ड रिवर डे (22 सितम्बर) को मैंने समाचार पत्र में पढ़ा कि प्रदूषण का स्तर बढ़ गया है। इसकी वजह से पानी में झाग उठ रहा है। वर्ष 2020 में जब कोरोना था और लॉकडाउन भी, तब नदी का प्रदूषण स्तर कम हो गया था। ये पढ़कर मुझे अच्छा नहीं लगा क्योंकि उद्योगों के फिर से शुरू होने से नदी में प्रदूषण का स्तर बढ़ने लगा है। क्या हम लोग नदी में गन्दा पानी मिलाने से पहले उसे साफ नहीं कर सकते?

अखबार से पढ़ी खबर

मोहित
तितली समूह, दिगन्तर विद्यालय, भावगढ़, जयपुर, राजस्थान

मैंने अखबार से कोलकाता में एक डॉक्टर के साथ हुए रेप के बारे में जाना। मुझे उसे लड़की के बारे में बहुत बुरा लगा। हमारे देश में लड़कों-लड़कियों में अभी भी भेदभाव होता है। मैं सोचता हूँ कि हमारे देश को आज़ादी तो मिल गई, पर हमारे देश में लड़कियों को आज़ादी से जीने का हक अभी भी नहीं मिला। उनके साथ इतनी गन्दी हरकतें होती हैं। जब उस कोलकाता वाली डॉक्टर को मारा गया तो उसके माँ-बाप को कितना बुरा लगा होगा। जबकि डॉक्टर तो हमारे देश के लोगों की जान बचाते हैं। उन्हें भी कोई मिलना चाहिए जो उनकी रक्षा कर सके।

नाट्यगृह में आग

स्वराली अशोक अवताडे
तीसरी, सृजन आनन्द विद्यालय, कोल्हापुर, महाराष्ट्र
मराठी से अनुवाद: कृत्तिका बुरघाटे

संगीत सूर्य केशवराव भोसले नाट्यगृह में आग लग गई। ये खबर सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ। 7 मिनिट के अन्तराल में वहाँ पर आग बुझाने वाली गाड़ी आ पहुँची। उसने आग बुझाने के लिए अपनी जी-जान लगा दी। म्यूनिस्पालटी के कर्मचारियों ने अगल-बगल की दुकानों से तुरन्त सिलेंडर हटवाए और बिजली की सप्लाई भी बन्द कर दी। मैं अपने बाबा के साथ घटना स्थल पर गई थी। शाम को नाटक होने के कारण वहाँ पर बहुत बड़ा मण्डप लगाया हुआ था। इस वजह से आग बुझाने में मुश्किल हो रही थी। उस मण्डप को निकाला गया। नाट्यगृह आग में जलकर खाक हो गया। मुझे ये देखकर बहुत दुख हुआ। उस नाट्यगृह को फिर से खड़ा करने के लिए मैं भी अपना योगदान देना चाहती हूँ।

समाचार

आसमान में दिखेंगे दो चन्द्रमा

आरना शंकर
चौथी, कान्हा, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

एक दिन मैं अपने भाई के साथ लूडो खेल रही थी और मेरे पापा समाचार देख रहे थे। तभी समाचार में आया कि आसमान में दिखेंगे दो चन्द्रमा। जब मैंने यह सुना तो मैं बहुत ही हैरान हो गई। मैंने सोचा ऐसे कैसे हो सकता है। फिर मैं खेल छोड़कर समाचार देखने लग गई। उसमें बताया कि कुछ समय के लिए पृथ्वी के पास दो चन्द्रमा होंगे। वैज्ञानिकों ने 7 अगस्त 2024 को एक एस्टोराइड की खोज की थी। 29 सितम्बर से 15 नवम्बर के दौरान यह एस्टोराइड पृथ्वी की परिक्रमा करेगा। यह समाचार सुनकर मैं इस चाँद को देखने के लिए बहुत ही उत्साहित हूँ।

मंकीपॉक्स वायरस

आयरा जैन
दस साल, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

कुछ दिन पहले मुझे पता चला कि केरल में मंकीपॉक्स वायरस चारों ओर है और वहाँ लोगों को प्रभावित कर रहा है। मैंने इसके बारे में कुछ नकारात्मक बातें भी सुनी हैं। इस बात को सुनने के बाद मेरे पैरों के नीचे से तो धरती ही खिसक गई। मैं बहुत डर गई थी। मैं डर से अधमरी हो गई थी। लेकिन फिर मुझे पता चला कि वो मुझसे अभी बहुत दूर है। तो मुझे थोड़ा अच्छा लगने लगा।

इज़राइल और ईरान का युद्ध

अवनीश यादव
पाँचवीं, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल, चंगलपेट, तमिलनाडु

जब मैं यह समाचार सुनता हूँ कि इज़राइल और ईरान में युद्ध जैसी स्थिति आ गई है तो मैं बहुत परेशान हो जाता हूँ। युद्ध से बहुत-से घर तबाह हो जाते हैं। हमें युद्ध कभी नहीं करना चाहिए। युद्ध बहुत विनाशकारी होते हैं। यह बच्चों और महिलाओं के लिए बहुत दुखदायी होता है।

क्यों क्यों क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था:

कुछ ऐसी जगहें होती हैं जहाँ हम सुरक्षित महसूस करते हैं, जहाँ हमें किसी भी किस्म के शोषण का सामना नहीं करना पड़ता। कोई हमें परेशान नहीं करता – ना हमारे रंग-रूप को लेकर, ना कपड़ों की स्टाइल को लेकर और ना ही हमारे विचारों को लेकर। तुम्हारे लिए ऐसी जगह कौन-सी है, और क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

अगले अंक के लिए सवाल है:

चकमक में तुम किस-किस तरह की सामग्री पढ़ना-देखना चाहोगे, और क्यों?

तुम्हारा मन करे तो तुम भी अपने जवाब हमें भेजना। जवाब तुम लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें merapanna.chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक
एकलव्य फाउंडेशन,
जमनालाल बजाज परिसर,
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

अगस्त्या, दसवीं, दिल्ली पब्लिक स्कूल इंटरनेशनल, गुरुग्राम, हरयाणा

मेरे लिए ऐसी जगह किताबों की दुनिया है। जब मैं किताबें पढ़ता हूँ या किसी कहानी में डूब जाता हूँ, तो मैं एक अलग ही दुनिया में होता हूँ। यहाँ कोई शोषण नहीं होता, ना किसी के विचारों का दबाव होता है, और ना ही कोई आकलन करता है कि मैं कैसा हूँ, क्या सोचता हूँ या क्या पहनता हूँ। किताबें मुझे स्वतंत्रता और सुरक्षा का अनुभव देती हैं, जहाँ मैं खुद को खोज सकता हूँ, सीख सकता हूँ, और नई जगहों पर जा सकता हूँ बिना किसी डर या पूर्वाग्रह के।

चित्र: ममता कुमारी, तेरह साल, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

भूमिका ध्रुव, पाँचवीं, प्राथमिक शाला, ढाबाडीह, बलौदा बाज़ार, छत्तीसगढ़

मैं अपने घर पर रहती हूँ, तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। मेरे घर में मुझे कोई रोकता-टोकता नहीं है। मेरे कपड़ों को लेकर भी कोई कुछ नहीं कहता और मेरे चेहरे को देखकर भी कोई कुछ नहीं कहता। मैं अपने घर में बहुत खेलती हूँ। मैं अपने घर पर बहुत पढ़ती हूँ तो कोई भी मुझे कुछ काम नहीं देता है। मैं अपने घर में पेड़-पौधे भी उगाती हूँ। बस मुझे साँपों से बहुत डर लगता है।

अलकाना, नौवीं, अपना तालीम घर, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

हम सुरक्षित घर के आसपास के माहौल में ही करते हैं। और कहीं जाते हैं तो वहाँ के लड़के हमें बहुत गौर-से देखते हैं। वहाँ पर हमें सुरक्षित महसूस नहीं होता। लेकिन हम फिर भी दिखावा करते हैं कि हम नहीं डरते हैं। रही बात स्टाइल की तो वो तो हमारे अन्दर है। चाहे कोई कुछ भी कहे कि ये काली है, इसकी आँखें तिरछी हैं – हम अपने आप को अच्छा ही समझते हैं। कपड़ों को लेकर जो लोग कहते हैं कि तुम्हारे पास कपड़े नहीं हैं क्या। तो उनको क्या पता कि हमारे पास बहुत कपड़े हैं। कोई कुछ भी कहे हमें अपने आप को देखना है।

मानसी, दसवीं, अपना तालीम घर, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

मेरे लिए स्कूल सुरक्षित जगह है। वह इसलिए, क्योंकि वहाँ पर हिन्दु-मुस्लिम नहीं किया जाता। वहाँ पर मेरी सहेलियाँ मिलती हैं जिनके साथ बहुत मज़ा आता है। किसी के भी टिफिन से कुछ भी माँगकर खा सकते हो। टीचर लोग सभी बच्चों को एक जैसा समझती हैं।

चित्र: शिवानी, बारह साल, लक्ष्यम संस्था, दिल्ली

अफसरा जहाँ, छठवीं, विश्वास विद्यालय, गुरुग्राम, हरयाणा

मेरे लिए ऐसी जगह पुस्तकालय है। वहाँ मुझे हमेशा शान्त, विचारशील और सुरक्षित माहौल का अनुभव होता है। किताबों के बीच मुझे ऐसा लगता है कि कोई मुझे जज नहीं कर रहा है – ना मेरे विचारों को, ना मेरे कपड़ों को और ना ही मेरे व्यक्तित्व को। वहाँ केवल ज्ञान, विचार और रचनात्मकता का स्वागत होता है। और हर किसी को अपनी सोच के हिसाब से ज्ञान अर्जित करने की स्वतंत्रता होती है। यह एक ऐसी जगह है जहाँ कोई प्रतिस्पर्धा या दबाव नहीं होता, सिर्फ मन की शान्ति होती है।

अंजू कुमारी, चौथी, अपना स्कूल, गम्भीरपुर सेंटर, चम्पारण, बिहार

आजकल लड़कियों की सुरक्षा कहीं नहीं होती है। मेरे विचार से जंगल में हम ज़्यादा सुरक्षित हैं क्योंकि वहाँ किसी इन्सान से कोई खतरा नहीं है।

अनुराग पट्टा, आठवीं, चकमक क्लब, उदयपुर, मण्डला, मध्य प्रदेश

हमको चकमक क्लब में अच्छा लगता है क्योंकि इधर जब आना है तब आ जाओ। कोई रोकटोक नहीं। हमको स्कूल में अच्छा नहीं लगता क्योंकि वहाँ पर 4 बजे छुट्टी मिलती है और 10 बजे आना पड़ता है। और हमें होमवर्क भी मिलता है और नहीं कर पाए तो डाँट पड़ती है। चकमक क्लब में कोई कुछ नहीं कर सकता। उधर कोई मारपीट नहीं होती। इसलिए उधर हम सुरक्षित हैं।

पुष्पेन्द्र कुमार, छठवीं, सीख समूह, स्वतंत्र तालीम, मलसराय सेंटर, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

मेरे हिसाब से सबसे अच्छी जगह है जब हम पेड़ पर चढ़ जाते हैं। तो हमें वहाँ पर कोई कुछ नहीं कहता। न ही कोई वहाँ पर हमें रोक-टोक करत है, न कोई देखता है।

चित्र: हिमांशी कीर, छठवीं, टेमिल केन्द्र, सोनतलाई, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

सतेन्द्र धूमकेती, सातवीं, चकमक क्लब, उदयपुर, मण्डला, मध्य प्रदेश

मैं बाहर सुरक्षित महसूस करता हूँ क्योंकि बाहर मेरे साथ दोस्त रहते हैं। क्योंकि मेरे दोस्त मेरी बात मानते हैं। और घरवाले मुझे मेरे दोस्तों के साथ घूमने से मना नहीं करते हैं। और जब मैं अकेले घूमता हूँ तो मुझे सुरक्षित महसूस नहीं होता है। इसलिए मैं बाहर अकेले नहीं घूमता हूँ।

काजल साहू, आठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, लच्छनपुर, पलारी, बलौदा बाज़ार, छत्तीसगढ़

मेरे लिए ऐसी जगह मेरा घर है जहाँ भरा-पूरा परिवार एक साथ खुशहाली से रहता है। परिवार में किसी भी प्रकार का शोषण नहीं होता और ना ही किसी चीज़ के लिए रोक-टोक। मेरे परिवार वाले मुझे आगे बढ़ने के लिए हमेशा प्रेरित करते हैं। बाहर के लोग तो हमारे रंग-रूप को लेकर टिप्पणी कर ही देंगे कि तुम काली हो, गोरी हो। लेकिन परिवार में ऐसा कुछ नहीं होता। इसलिए मेरा घर मेरे लिए पसन्दीदा और सुरक्षित जगह है।

चित्र: फलक खान, सातवीं, अपना तालीम घर, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

तल्बिया फातिमा, तीसरी, अपना तालीम घर, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

मेरे लिए सब जगह अच्छी हैं। क्योंकि जब कोई मुझे कुछ कहता है और मारता है तब मैं खुद ही निपट लेती हूँ। इसलिए हमें कोई परेशान नहीं करता।

रघुवीर सिंह, सातवीं, शासकीय माध्यमिक शाला, अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

मेरे को स्पेस में सबसे सुरक्षित लगता है क्योंकि वहाँ कोई मनुष्य नहीं होता। वहाँ मैं जो चाहूँ कर सकता हूँ। वहाँ मैं अपने तरीके से रहूँगा, जैसे चाहूँ वैसे। वहाँ मुझे कोई नहीं डाँटेगा। आपको क्या लगता है?

नाथा पच्ची जवाब

1. 1 और 9, क्योंकि 1+9 =10, 1×9 = 9

2. $101-10^2 = 1$

3.

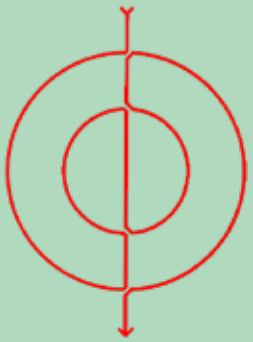

4. 18

5. 3 भेड़ें, 2 बकरियाँ और 1 घोड़ा।

6.

का	दी	द	पों	ग	ल	ज
मा	वा	श	दो	ई	मा	न्मा
हो	ली	ह	स	द	क	ष्ट
मं	श	रा	म	न	व	मी
बै	सा	खी	की	ओ	छ	ठ
र	क्षा	ब	न्ध	ण	बि	हु
दी	र	क्रि	स	म	स	ध

7.

15	+	6	=	21
+		+		+
7	+	12	=	19
=		=		=
22	+	18	=	40

9.

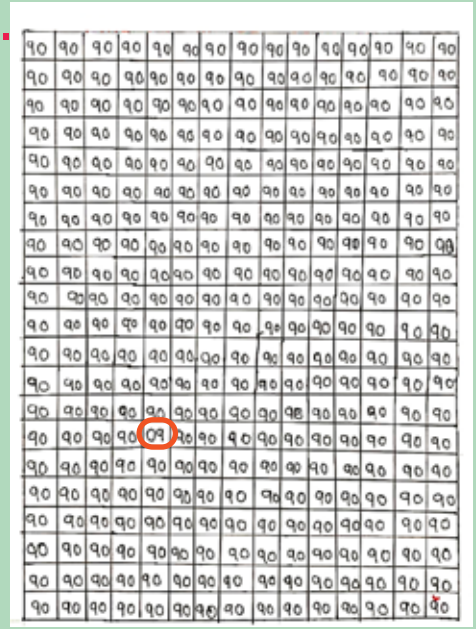

10.

11.

दी	मा	को	आ	मे	र	कि	ला	बा
इ	पा	र्णा	मै	सू	र	पै	ले	स
ण्डि	मा	क	वि	ज	य	स्त	भ्भ	ला
या	ता	म	ला	ता	ज	म	ह	ल
गे	चा	न्दि	बा	सा	न्त	गो	वा	कि
ट	स्टू	र	जी	ड़ा	र	ल	म	ला
वि	प	कू	मी	मे	म	गु	ह	पा
क्टो	रि	या	का	ना	न्त	म्ब	ल	ज
कु	तु	ब	मी	ना	र	ज	बा	मा

12. हो सकता है, वो सैम की मम्मी हैं।

13. अहाना व मैथ्यू दोनों की बातों पर गौर करो तो अस्मा का जन्मदिन 18 अप्रैल के बाद और 20 अप्रैल से पहले आता है। यानी कि जन्मदिन 19 अप्रैल को होगा।

14. दिया

15. मान लो कि शीशी 1 में नमक है। पर इस स्थिति में शीशी 1 व 4 की चिप्पी सही हो जाएगी। इसलिए ऐसा नहीं हो सकता। यदि शीशी 2 में नमक है तो इस स्थिति में शीशी 2 व 3 की चिप्पी सही हो जाएगी। इसलिए यह भी नहीं हो सकता। यदि शीशी 3 में नमक है तो इस स्थिति में केवल शीशी 4 की चिप्पी सही होगी। इसलिए नमक शीशी 3 में ही है।

16.

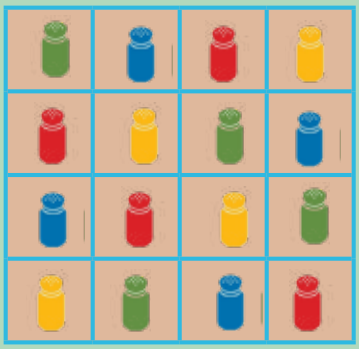

2	1	4	5	3	6			
3	6	5	2	4	1			
4	3	2	1	6	5			
1	5	6	4	2	3			
5	4	3	6	1	2			
6	2	1	3	5	4			

9	2	5	3	1	7	8	6	4
4	8	6	5	9	2	3	7	1
7	3	1	4	8	6	9	5	2
1	9	7	2	4	3	5	8	6
8	6	3	9	5	1	4	2	7
5	4	2	7	6	8	1	9	3
2	7	8	1	3	5	6	4	9
6	1	9	8	7	4	2	3	5
3	5	4	6	2	9	7	1	8

			1 जा			
		2 ता	ला	3 ब		
	4 डो	र		5 या	6 क	
7 डा	ल				8 टो	पी
	9 ची	10 नी		11 चू	रा	
		12 म	13 क	ड़ी		
			प			

1 चीं	2 टी		3 को	य	4 ल	
	5 ला	6 इ	ट		की	
7 चॉ		ना		8 कै	र	9 म
10 क	11 ल	म		म		क्का
	ड़		12 जु	रा	13 ब	
14 व	की	ल			15 टे	प
न			16 त	स्वी	र	

1 पा			2 हे	ली	3 कॉ	ए	4 र	
5 सा	6 इ	कि	ल		फी		ब	
	ल्ली		मे			7 स	ड़	8 क
9 कि		10 फु	ट	11 बॉ	ल			मे
12 स	रो	द		क्रि		13 ब		र
ल		की		14 ग	15 म	डू	ट	
16 प	ता		17 खे		18 फ	ल		
ट्टी		19 बु	ल	बु	ल			20 गे
	21 सा	त			22 र	स्सी	कू	द

भूलसुधार:

अक्टूबर अंक में प्रकाशित लेख 'एक रामकथा में छुपी एक विद्रोह की कहानी' में लिखा गया था कि यह 2000 साल पुरानी कहानी है। असल में यह 1000 साल पुरानी कहानी है।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

मैटी के नाम पत्र

कशिश

प्रिय मैटी,

तुम कैसे हो? मैंने तुम्हारी कहानी पढ़ी थी। तुमने बहुत अच्छे-अच्छे चित्र बनाए थे। तुमने किसी की बात नहीं मानी और नाचते-नाचते चित्र बनाते रहे। तुम्हारी मम्मी ने तुम्हें टीचर के पास भी भेजा लेकिन तुममें बदलाव नहीं आया। तुमने कक्षा में रॉकेट बनाकर निशाना लगाया लेकिन और तुम्हारी टीचर ने उन रॉकेट से झण्डी बनाकर क्लास में लगाया।

तुम चित्र बैठकर बनाया करो। मैं भी चित्र बनाती हूँ। मैं आज भी चित्र बनाकर लाई हूँ। तुम ऐसे ही सुन्दर-सुन्दर चित्र बनाया करो। मुझे बहुत अच्छा लगा कि तुम ऐसे सुन्दर-सुन्दर चित्र बनाते हो।

कशिश, तीसरी, प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी
बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश

यह पत्र कशिश ने एकलव्य फाउंडेशन से प्रकाशित किताब *मैटी बैठ जाओ* की किरदार मैटी को लिखा है।

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन